मासिक

कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com

Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-10 | अंक-01 अगस्त 2026 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00

DPS AJMER
Sr. Sec. School
Tabiji Farm Road, Ajmer
ESTABLISHING
The Right Environment
We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.
SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman
Our Activities
Archery & International
Level Shooting Range
Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"
Horse Riding Club
Won Laurels at the National Level
Skating Rink
Karate Club
We have won Karate Championship at District, State & National Level.
Art & Craft
Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer
Web: www.dpsajmer.in
E-Mail: info@dpsajmer.in

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

संरक्षक	:	जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
अध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	मो. 9414810584
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
		रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
		चेतन बालोदिया	मो. 9414052736
मुख्य सलाहकार	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक - 9414554322, **सह-सम्पादक :** रमेश तोंदवाल 9460870125 एवं प्रिया मारवाल 9408093778, नन्दकिशोर कुदीवाल 9784657951, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया 9351680888, **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 तथा राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397** **दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580** **सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444** **वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299** **मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188** **जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301** **उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687** **ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493,** रवि बेडवाल **मो. 8290303003** **बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957** **सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812** **इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645** **किशनगढ़ :** प्रभुदयाल तुनगरिया **9680931428**

प्रोसेसिंग व मुद्रक : राज ब्लॉक्स, 22 गोदाम, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ट संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ट संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

सम्पादकीय

सावन भादों का माह हमारे जीवन में उमंग लेकर आता है। इन दिनों जब धरती पर वर्षा होती है तो नदी-नालों में पानी का प्रवाह होता है, झरने व इन्द्रधनुष जीवन में अलग ही सुकून भर देते हैं। धरती पर छाई हरियाली हर जीव-जन्तु तथा वनस्पति में जान फूंक देती है। किसानों के चेहरों पर प्रसन्नता झलकती है। बच्चे तो मानो लम्बी प्रतीक्षा कर रहे थे कब वर्षा आये और वे छपाक-छपाक कर उसमें नहायें व खेलें। किन्तु वर्षा ऋतु में इम्यूनिटी कम हो जाती है और भीगने से बीमार भी हो सकते हैं। इन दिनों नींबू पानी का सेवन अधिक करना अच्छा रहता है और हाँ जब घर से बाहर जाये तो सावधानी रखें क्योंकि सड़क पर गड्ढे हो सकते हैं तथा हम कहीं चोट ग्रस्त न हो जायें।

ये दो माह सनातन संस्कृति के महत्वपूर्ण दिन भी होते हैं। इन महीनों में तीज, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी जैसे त्योहार आते हैं जो हमारे जीवन में नई ऊर्जा भर देते हैं। इसी माह में डिग्गी-कल्याणजी की लक्खी यात्रा आती है तो तेजाजी तथा रामदेव जी का मेला भी होता है, लोग इनमें पैदल यात्रा भी करते हैं। व्रत और पदयात्राओं से हमारा शरीर डीटोक्स होता है तथा धार्मिक भावना बढ़ने के साथ मेलजोल भी बढ़ता है। शायद इसी लिए हमारे पूर्वजों ने इन यात्राओं को प्रारम्भ किया होगा।

पहली बार 80वें स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले की प्राचीर से 'वंदे मातरम' गीत गाया गया। यह गीत स्वतंत्रता आन्दोलन के समय देशवासियों में एक नया जोश भर देता था इसीलिए तब यह जन-जन का गीत बन गया था। सुखद है कि हाल ही में संसद में इस गीत को कानूनी जामा पहनाया गया, पर दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस गीत पर भी हमारे देश में विरोध का स्वर कुछ राजनैतिक दलों एवं व्यक्तियों ने उठाया है। हमें दलगत भावनाओं और तुष्टीकरण से ऊपर उठना होगा तब ही देश के लोगों का भला हो पाएगा।

हम सभी कुमावतजन एकजुट रहें तथा सभी के साथ लेकर चलें। तब ही हम तथा हमारे द्वारा निर्मित संस्थाएं आगे बढ़ पायेंगी। संस्थाओं के माध्यम से हम वर्ष में 1-2 बार कॉमन बिन्दुओं पर मिल बैठकर चिंतन करें तो ऐसा कोई मसला नहीं जो हल नहीं हो सकता। अत: संस्थाएं अंह का त्याग कर और इस दिशा में सोचे।

राजस्थान में स्थानीय निकायों के चुनाव होने जा रहे हैं। इन चुनावों में कुमावत समाज के लोग पूरी तैयारी के साथ उम्मीदवार खड़े करें और उन्हें जीताने हेतु अपना पूरा प्रयास करें।

आप सभी को **रक्षाबंधन, जन्माष्टमी** तथा **गणेश चतुर्थी** पर्व की हार्दिक बधाई।

- रमेश कुमावत (गैदर)

हमारी वेबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय 3
गुरु पूर्णिमा पर संत मुरली मनोहर 'अकिंचन' महाराज सम्मानित 5
अंगदान-जीवनदान प्रदर्शनी 2026 ''धरती पर अवतार'' सम्पन्न 5
बिड़ला ऑडिटोरियम और जवाहर कला केंद्र में सजी गीतों की शाम 5
जयपुर की मानिव कुमार ने जीता कांस्य पदक 6
जेट परीक्षा में नावा के शुभम का राष्ट्रीय स्तर पर परचम 6
अर्नव कुमावत नेशनल शूटिंग
चैंपियनशिप के लिए चयनित 6
धूमधाम से निकली श्री राधा मोहन जी महाराज की रथयात्रा, प्रतिभावान
विद्यार्थियों का हुआ सम्मान 7
कुमावत समाज साँवेर द्वारा कलश यात्रा आयोजन किया गया 7
सावेर में हर्षोल्लास के साथ मनाया 'दिवासा' 7
भैराना में 21 खसरों में नहीं बनेगा इंडस्ट्रियल एरिया 7
मेवाड़ कुमावत समाज की कार्यकारिणी का विस्तार8
चार दिवसीय त्र्यंबकेश्वर यात्रा सम्पन्न 8
बालजी घोडेला की जयंति मनाई गई 8
राजस्थान क्षत्रिय कुमावत समाज, सूरत की नई कार्यकारिणी का हुआ निर्वाचन 8
सामाजिक राजनीतिक चिंतन शिविर-2026 8
गुरु पूर्णिमा पर 251 कन्याओं का दिव्य चरण वंदन, गूंजा श्री हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ 9
सवा सौ से अधिक श्रद्धालुओं ने किया सामूहिक रुद्राभिषेक 9
गंगा सहाय कुमावत का हत्यारा गिरफ्तार 9
पत्नी प्रशंसा दिवस 10
डोभाल को लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार 10
''संस्कृत दिवस एवं रक्षाबंधन : ज्ञान, संस्कृति और स्नेह का संगम'' 11
रेकी : ऊर्जा, शांति और आत्म-संतुलन की साधना 12
जन्माष्टमी: आधी रात को जन्म लेने वाले कृष्ण की कहानी और उसका अर्थ 13
रागी-एक सुपर फूड 14
अकिंचन महाराज द्वारा जगन्नाथपुरी में श्री मद्भागवत कथा होगी 14
प्रतिभावान व्यक्तित्व गायत्री वर्मा 15
रवि टम्टा ने बनाई उड़ने वाली कार 15
दिव्यांजलि कुमावत प्राकृतिक चिकित्साधिकारी पद पर चयनित 16
सनातन परंपरा, कर्म और समाधान का आध्यात्मिक विश्लेषण 17
आर्टिस्ट रामसिंह राजोरिया ने मोहन भागवत को दिखाई विश्व की सूक्ष्मतम गीता 18
आर्टिस्ट मारोठिया का अमेरिका में कला प्रदर्शन 18
रक्षाबंधन: स्नेह, समर्पण और अटूट बंधन का उत्सव 19
'वंदे मातरम्' गीत को राष्ट्रगान के समान कानूनी संरक्षण 19
विघ्नहर्ता श्री गणेश : जीवन जीने की कला और उत्सव का महत्व 20
दिनचर्या संबंध नियम 22
गरीब और अमीर के बीच की खाई 22
देश और समाज में बढ़ रही हैं वास्तु की अहमियत 23
एआई के दो रूप 23
विशिष्ठ संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि 24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची 25
पत्रिका नहीं मिलने पर सम्पर्क करें 26
श्री संजय वर्मा (तोंदवाल) सम्मानित 27
मदन कुमावत सहायक आचार्य (ABST) चयनित 27
वास्तु दोषों का पितृ दोष से संबंध 28
भाजपा ने कुमावत बंधुओं को नगर परिषद में चुनाव प्रभारी बनाया 29

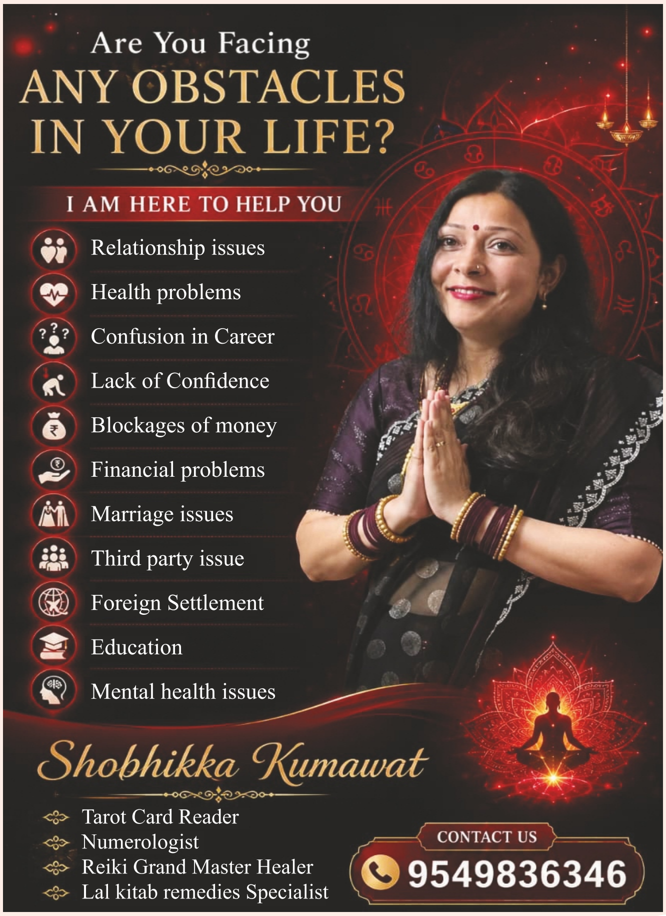

गुरु पूर्णिमा पर संत मुरली मनोहर 'अकिंचन' महाराज सम्मानित

जयपुर के प्रख्यात कथावाचक मुरली मनोहर अकिंचन महाराज को गुरु पूर्णिमा महोत्सव के अंतर्गत कृष्णा नगर द्वितीय, लालकोठी, जयपुर में आयोजित सम्मान समारोह में जय श्रीमन्नारायण परिवार की ओर से '**दादा गुरुदेव श्री श्यामसुंदर आचार्य पुरस्कार**' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान इन्द्र मणि महाराज ने प्रदान किया। समारोह में आदित्य वर्धन, गिरधर शर्मा सहित

अनेक श्रद्धालु एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। श्री मुरली मनोहर 'अकिंचन' महाराज तीन दशक से **भागवत कथा, रामकथा, नानी बाई रो मायरो और हनुमत कथा** के माध्यम से सनातन संस्कृति, भारतीय जीवन मूल्यों और भक्ति का संदेश जन-जन तक पहुंचा रहे हैं। उनके प्रवचनों से हजारों परिवार धर्म, संस्कार और सेवा के मार्ग पर प्रेरित हुए हैं।

अंगदान-जीवनदान प्रदर्शनी 2026 ''धरती पर अवतार'' सम्पन्न

अंगदान केवल किसी को अंग देना नहीं, बल्कि किसी की बुझती जिंदगी में उम्मीद की रोशनी जलाना है।

जयपुर के जवाहर कला केंद्र में 12-13 अगस्त को आयोजित अंगदान-जीवनदान प्रदर्शनी 2026 ''**धरती पर अवतार**'' के माध्यम से अंगदाताओं की प्रेरणादायी कहानियों, ट्रांसप्लांट योद्धाओं के संघर्ष और अंगदान के महत्व को समाज के सामने लाने का प्रयास किया गया। यह प्रदर्शनी सिर्फ तस्वीरों और कहानियों की प्रदर्शनी नहीं, बल्कि उन महान अंगदाताओं को नमन है, जिन्होंने अपने जाने के बाद भी कई जिंदगियों को जीने का

अवसर दिया।

प्रदर्शनी में अंगदान एवं चिकित्सा क्षेत्र के प्रतिनिधियों, ट्रांसप्लांट समुदाय, अंगदान जागरूकता अभियान के स्वयं सेवक, सामाजिक कार्यकर्ता इत्यादि ने भाग लिया। इस प्रकार की प्रदर्शनी पहला प्रयास है जिसे समाज के लोगों ने सराहा है साथ ही अंगदान करने वाले वीरों को भी उचित सम्मान मिला है।

आइए, अंगदान के संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं और अपने जीवन को भी सार्थक बनाएं। अंगदान करें — जीवनदान दें। अंगदाता वास्तव में धरती पर अवतार हैं।

बिड़ला ऑडिटोरियम और जवाहर कला केंद्र में सजी गीतों की शाम

आजा तेरी याद आई... मोहम्मद रफी के गीतों की प्रस्तुति

बिड़ला ऑडिटोरियम में 26 जुलाई को हिंदी फिल्म संगीत के स्वर्णिम दौर की यादें फिर जीवंत हो उठीं। '**आजा तेरी याद आई...**' की धुनों के साथ सजी इस संगीतमय शाम में मोहम्मद रफी के अमर नगमों की प्रस्तुति दी गई।

बालोदिया लाइव बैंड एवं डायमंड ऑर्केस्ट्रा के तत्वावधान में आयोजित इस शाम में आशा भोसले और सुमन कल्याणपुर को भी याद किया गया। अभिनेता धर्मेंद्र पर फिल्माए गए लोकप्रिय गीतों की विशेष प्रस्तुतियां हुई। कार्यक्रम निर्देशक मोहन कुमार बालोदिया ने '**मैं जट यमला पगला दीवाना**' गीत की प्रस्तुति दी। वहीं, रश्मि

बालोदिया ने '**ओ साथी रे, तेरे बिना भी क्या जीना**' प्रस्तुत कर गीत को अपनी भावपूर्ण आवाज में जीवंत कर दिया। '**ओ हसीना जुल्फों वाली**' में मोहन कुमार बालोदिया और निकिता कोका लालवानी ने युगल प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में कृतिका ने भी नृत्य प्रस्तुति देकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर संजय भटनागर, बी. के. मालपानी, संजय खूंटेटा, जयसिंह, देवेन सिन्हा, सुधीर शर्मा, मनीषा जैन और विनेहा पुरोहित ने भी सदाबहार गीतों की प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर कार्यक्रम के प्रायोजकों तथा समाज के प्रतिष्ठित हस्तियों को सम्मानित भी किया गया।

साउथ एशियन ओपन कराटे चैम्पियनशिप

जयपुर की मानिव कुमार ने जीता कांस्य पदक

जयपुर। नेपाल की राजधानी काठमांडू में 7-8 अगस्त 2026 को आयोजित 2nd **साउथ एशियन ओपन इंटरनेशनल कराटे चैंपियनशिप 2026** में प्रतिभावान खिलाड़ी मानिव कुमार ने शानदार प्रदर्शन करते हुए सब-जूनियर गर्ल्स (18 किग्रा भार वर्ग) में कांस्य पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाया। अकादमी के कोच नवीन कुमार और मीना कुमावत के मार्गदर्शन में मानिव ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में भाग लिया। दक्षिण एशियाई देशों के

कड़े मुकाबलों के बीच मानिव ने अपनी बेहतरीन तकनीक, अनुशासन और खेल भावना का परिचय देते हुए सब-जूनियर श्रेणी में यह पदक अपने नाम किया। मानिव की यह उपलब्धि आगामी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए हमारे युवा खिलाड़ियों को प्रेरित करेगी। मानिव की उपलब्धि पर जयपुर में सम्मान समारोह आयोजित किया गया जहां मानिव के पिता डॉ नरेश कुमार व मां डॉ ममता एन कुमावत, दादा घीसाराम कुमावत का भी सम्मान किया गया।

जेट परीक्षा में नावा के शुभम का राष्ट्रीय स्तर पर परचम

नावां सिटी। पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नावा के प्रतिभाशाली छात्र शुभम कुमावत ने जेट (JET) परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करते हुए पूरे क्षेत्र का नाम राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया है। जेट परीक्षा में सम्मिलित 37,497 अभ्यर्थियों के बीच शुभम ने अपनी मेधा का परिचय देते हुए ऑल इंडिया रैंक (सामान्य वर्ग) में 91वीं तथा ओबीसी वर्ग में 58वीं रैंक प्राप्त कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। उल्लेखनीय है कि शुभम कुमावत पढ़ाई के साथ-साथ नवाचार और वैज्ञानिक सोच में भी अग्रणी रहे हैं। वे प्राकृतिक खेती एवं विज्ञान मॉडल प्रतियोगिता में लगातार दो बार जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर सम्मानित हो चुके हैं। उनकी यह उपलब्धि उनकी बहुमुखी प्रतिभा और अनुसंधान के प्रति रुचि को दर्शाती है। शुभम कुमावत का लक्ष्य भविष्य में कृषि वैज्ञानिक बनकर कृषि क्षेत्र में नवाचार एवं आधुनिक तकनीकों के माध्यम से किसानों की उन्नति में योगदान देना है।

शुभम कुमावत की इस शानदार उपलब्धि पर **कुमावत इंडिया** पत्रिक की ओर से हार्दिक बधाई।

15 अगस्त को श्री बाल निवास ट्रस्ट (रजि.), जयपुर में स्वतन्त्रता दिवस समारोह आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी श्रीमान लोकेश सैंगाठिया द्वारा झंडारोहण किया गया। इस अवसर पर अनेक समाज बंधु उपस्थित रहे।

अर्नव कुमावत नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप के लिए चयनित

देहरादून में आयोजित जसपाल राणा शूटिंग चैंपियनशिप (प्री-नेशनल) में शानदार प्रदर्शन करते हुए इलाइट शूटिंग एकेडमी के होनहार शूटर एवं ए.एन. पब्लिक स्कूल, चौमूं के छात्र अर्नव कुमावत (पुत्र डॉ. के. एल. कुमावत) ने ऑल इंडिया रैंकिंग (Sub Youth) में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त कर नेशनल शूटिंग चैंपियनशिप के लिए अपना चयन सुनिश्चित किया है। इनकी यह उपलब्धि कड़ी मेहनत, लगन और लक्ष्य के प्रति समर्पण का परिणाम है। इन पर कुमावत समाज को गर्व है। अर्नव कुमावत को इस शानदार सफलता पर **हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।**

धूमधाम से निकली श्री राधा मोहन जी महाराज की रथयात्रा, प्रतिभावान विद्यार्थियों का हुआ सम्मान

सवाई माधोपुर। सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा (रजिस्टर्ड) एवं कुमावत समाज के तत्वावधान में रविवार को भगवान श्री राधा मोहन जी महाराज की भव्य रथयात्रा गाजे-बाजे और धार्मिक उल्लास के साथ निकाली गई। रथयात्रा का शुभारंभ शहर स्थित कुमावत मोहल्ला बालाजी की बगीची से हुआ। पूरे मार्ग में श्रद्धालु भक्ति गीतों और जयघोषों के साथ उत्साहपूर्वक शामिल हुए। जिला अध्यक्ष विष्णु दौराया ने बताया कि रिमझिम बारिश के बीच रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजे समाज के युवा, महिलाएं, पुरुष एवं बच्चे 'श्री राधा मोहन जी महाराज की जय' के जयकारे लगाते हुए भजनों की धुन पर नृत्य करते हुए रथयात्रा के साथ चले। श्रद्धा और उत्साह से सराबोर यह शोभायात्रा शहर के प्रमुख मार्गों से होकर निकली। आयोजित समारोह में समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। महामंत्री दिनेश उदयवाल ने

बताया कि कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष रामेश्वर बंबोरिया, राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. जयनारायण जूनवाल, राष्ट्रीय सलाहकार सत्यनारायण खोवाल सहित विमल अनावरिया, रूप सिंह कारगवाल, सौभागमल भदानिया, बाबूलाल भैरोदिया, भंवरलाल उदयवाल, बेनी प्रसाद सिरोटा, त्रिलोकचंद खटखटा, पवन देतवाल, लक्ष्मीनारायण खनदारिया, दीपक सिरसवा, दीपू जालवाल, रामबाबू कुमावत, भेरूलाल भाना, भगवान खनदारिया, राजवीर कुमावत सहित समाज के अनेक पदाधिकारी एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। रथयात्रा में समाज के सैकड़ों महिला-पुरुषों और युवाओं ने सहभागिता कर आयोजन को सफल बनाया। कार्यक्रम के समापन पर सामूहिक गोठ का आयोजन किया गया, जिसमें समाज के लोगों ने प्रसादी ग्रहण कर सामाजिक एकता और भाईचारे का संदेश दिया।

कुमावत समाज साँवेर द्वारा कलश यात्रा आयोजन किया गया

साँवेर मध्यप्रदेश में कुमावत समाज की राजधानी के रूप में पहचाने जाने वाले साँवेर मे गत 8 अगस्त 2026 को भव्य

कलश यात्रा आयोजन किया जो अलखधाम व बिलकेश्वर मंदिर, केशरीपुरा, साँवेर से प्रारम्भ हो कर महाकालेश्वर मंदिर पर समापन हुई।

इस यात्रा में समाजजनों के अलावा अन्य समाज के सेकड़ों महिला-पुरुष शामिल हुए। यात्रा के दौरान जगह जगह पर समाजनों द्वारा स्वागत कर चाय, नाश्ता, करवाया। यात्रा में समाजजनों द्वारा वापस आने के अपने अपने वाहन लगाए। यात्रा समापन पर उज्जैन में सहभोज का आयोजन भी किया गया था। **-नेमीचंद कारवाल**

सावेर में हर्षोल्लास के साथ मनाया 'दिवासा'

मध्यप्रदेश की राजधानी कहे जाने वाले साँवेर में हरियाली अमावस्या का त्यौहार, जिसे मालवा में 'दिवासा' कहा जाता है, साँवेर में अनूठी परम्परा के साथ मनाया गया। शाम को नन्ही-नन्ही बालिकाएं कटकिया नदी में जवारे विसर्जन करती है और मुक्का बार खेलती

है। इस खेल में मुक्का मार कर धानी दी जाती है। इसी के साथ नगर के प्रमुख मंदिरों मे महाआरती होने के पश्चात् धानी का प्रसाद वितरण किया जाता है। चित्र श्री कृष्ण मंदिर केशरीपुरा का है जिसमें समिति के अध्यक्ष श्री सूर्य कुमार ओसतवाल, नेमीचंद कारवाल, शंकरलाल डूंगरवाल, नेमीचंद मेरावड़िया, घनश्याम मण्डलीया, रमेशचंद्र चंगेड़िया धानी प्रसाद वितरण करते हुए है।

भैराना में 21 खसरों में नहीं बनेगा इंडस्ट्रियल एरिया

जयपुर। बिचून में भैराणा धाम में प्रस्तावित इंडस्ट्रियल एरिया के लिए आवंटित जमीन में से 206.98 हैक्टेयर जमीन को जेडीए ने निरस्त कर दिया। लगातार विरोध और विवाद के बाद जेडीए भूमि एवं संपत्ति निस्तारण समिति की मीटिंग आवंटन खारिज करने के बाद अब इस ग्रीन एरिया में इंडस्ट्रियल एरिया नहीं बनाया जा सकेगा।

गौरतलब है कि जयपुर से करीब 50 किमी दूर अजमेर-जयपुर हाईवे पर भैराणा गांव में 800 बीघा जमीन पर रीको को औद्योगिक क्षेत्र के लिए जमीन आवंटन हुआ था। इस स्थान पर संत दादू दयाल जी की 500 साल पुरानी तपोस्थली और मोक्ष स्थली का हवाला देकर साधु-संतों ने विरोध शुरू कर दिया। आंदोलन हुआ और सरकार को बैकफुट पर आना पड़ा। इस निर्णय से संतों एवं भैराणा धाम से जुड़े श्रद्धालुओं ने राहत की सांस ली है। ज्ञातव्य रहे कि यहां पर अधिकांश संत कुमावत समाज से हैं।

मेवाड़ कुमावत समाज की कार्यकारिणी का विस्तार

राजसमंद। मेवाड़ कुमावत समाज के संगठन को सशक्त बनाने और सामाजिक गतिविधियों को गति देने के उद्देश्य से समाज की कार्यकारिणी का विस्तार किया है। समाज के अध्यक्ष शंकरलाल मेरावंडिया ने राजसमंद, चित्तौड़गढ़ और प्रतापगढ़ जिलों के लिए नए जिलाध्यक्षों की घोषणा की है। जारी सूची के अनुसार राजसमंद जिले से प्रहलाद साडीवाल को जिलाध्यक्ष मनोनीत किया गया है।

वहीं चित्तौड़गढ़ जिले की जिम्मेदारी रतनलाल गेंदर और प्रतापगढ़ जिले में किशनलाल पीपाडा को नया जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया है। समाज के अध्यक्ष शंकरलाल मेरावंडिया ने बताया कि इन नियुक्तियों का उद्देश्य कुमावत समाज की एकता को और अधिक मजबूत करना, समाज के विकास को गति देना तथा धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाना है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि नवनियुक्त जिलाध्यक्ष अपने अनुभव, नेतृत्व क्षमता और समाज सेवा के प्रति समर्पण के बल पर संबंधित जिलों में समाज के गौरव और मान-सम्मान को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे तथा समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभाएंगे।

चार दिवसीय त्र्यंबकेश्वर यात्रा सम्पन्न

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर आयोजित चार दिवसीय त्र्यंबकेश्वर यात्रा हुई जिसमें में गौभक्तों ने गुरुदेव भगवान एवं गौ माता के प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा, प्रेम, समर्पण तथा तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग प्रदान किया। सभी के आत्मीय व्यवहार, अपनत्व और सेवा-भाव के कारण यह यात्रा अत्यंत सुखद, आनंदमय और अविस्मरणीय बन सकी। इस पावन यात्रा में सभी ने जिस प्रेम, श्रद्धा और आत्मीयता का परिचय दिया, उसके लिए श्री नन्द किशोर कुदीवाल ने ह्रदय की गहराइयों से हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया है और ईश्वर से प्रार्थना की है कि गुरुदेव भगवान और गौ माता की कृपाहः सभी पर सदैव बनी रहे।

बालजी घोडेला की जयंति मनाई गई

जयपुर, 8 अगस्त। बाल निवास ट्रस्ट, कल्याण जी का रास्ता, जयपुर में दानवीर बालजी घोड़ेला का जयंती समारोह मनाया गया। जिसमें प्रधान ट्रस्टी रामप्रसाद घोड़ेला एवं महामंत्री डॉ जय नारायण जूनवाल के साथ ही अन्य समाज बंधु उपस्थित रहे।

बालनिवास में 10 कमरों के निर्माण कार्य की प्रगति पर चर्चा की गई। तीसरी मंजिल की छत कास्टिंग 17 अगस्त को हो गई है। समाज बंधुओं से बालनिवास स्थित छात्रावास में कमरे निर्माण कराने, भवन निर्माण सामग्री उपलब्ध कराने तथा निर्माण हेतु स्वेच्छा से सहयोग राशि देने की अपील की गयी है।

जो भी समाजन इसके लिए सहयोग करना चाहते हैं वे महामंत्री डॉ. जयनारायण जूनवाल से मो.9928700700 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

राजस्थान क्षत्रिय कुमावत समाज, सूरत की नई कार्यकारिणी का हुआ निर्वाचन

राजस्थान क्षत्रिय कुमावत समाज, सूरत की नवीन कार्यकारिणी का निर्वाचन सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

नई टीम समाजहित में पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य करते हुए समाज को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाए। निर्वाचित कार्यकारिणी इस प्रकार है:

अध्यक्ष मुकेश कुमावत कुराड़ा, उपाध्यक्ष भेराराम कुमावत,

कोषाध्यक्ष राजू कुमावत, संरक्षक मंत्री जयराम कुमावत, सचिव मोडुराम कुमावत, संगठन मंत्री डाल जी कुमावत, वित्त मंत्री रामनिवास कुमावत गोंनरड़ा, मीडिया प्रभारी प्रेम कुमावत तथा गृह मंत्री चेनाराम कुमावत। सभी को हार्दिक बधाई

सामाजिक राजनीतिक चिंतन शिविर-2026

25 जुलाई जयपुर, विद्याधर नगर स्थित ज्योतिबा फुले सेक्टर-3 में आयोजित ''सामाजिक राजनीतिक चिंतन शिविर-2026'' में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी संगठन महासचिव ललित तूनवाल, सूरतगढ़ विधायक डूंगरराम गैदर, पंचपदरा पूर्व विधायक मदन प्रजापत, जैतारण के पूर्व विधायक सुरेन्द्र गोयल, आशिन्दं पूर्व विधायक नानूरामजी कुमावत, ब्लॉक अध्यक्ष विद्याधर नगर विधानसभा बद्री नारायण कुमावत के साथ शिविर में सामाजिक चेतना, संगठन की मजबूती एवं विभिन्न विषयों पर सार्थक विचार-विमर्श किया। ऐसे चिंतन शिविर समाज, संगठन और जनसेवा के संकल्प को नई ऊर्जा व नई दिशा प्रदान करते हैं। इससे पूर्व जयपुर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुनील शर्मा ने भी कुमावत समाजजनों के साथ बैठक की थी जिसमें समाज की अपेक्षाओं पर कुमावत समाज का जुड़ाव पर चर्चा व संवाद हुआ।

गुरु पूर्णिमा पर 251 कन्याओं का हुआ दिव्य चरण वंदन, गूंजा श्री हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ

ब्यावर में गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर एक ऐतिहासिक एवं अनूठा धार्मिक आयोजन भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पहली बार 9 वर्ष से कम आयु की 251 बालिकाओं को श्रीजी स्वरूप मानकर श्रद्धालुओं द्वारा उनका विधिवत चरण पूजन एवं चरण वंदन किया गया। सनातन संस्कृति में कन्याओं को देवी स्वरूप मानने की परंपरा के अनुरूप आयोजित इस कार्यक्रम ने सभी को भावविभोर कर दिया।

आयोजक जय नारायण कुमावत ने बताया कि श्री हनुमान चालीसा प्रबन्ध समिति के संस्थापक संत अमरनाथ महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने 251 बालिकाओं का श्रद्धापूर्वक पूजन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके उपरांत संत श्री अमरनाथ महाराज के सानिध्य में सामूहिक श्री हनुमान चालीसा पाठ सम्पन्न हुआ, जिसमें उपस्थित सभी श्रद्धालुओं ने भगवान श्री हनुमान जी महाराज एवं श्री भन्दे बालाजी महाराज से समाज, राष्ट्र एवं सनातन धर्म की उन्नति, सुख-समृद्धि और विश्व कल्याण की प्रार्थना की।

कार्यक्रम में संत-महात्माओं, मातृशक्ति, युवाओं एवं धर्मप्रेमियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। श्रद्धालुओं ने इस आयोजन को भारतीय संस्कृति, नारी सम्मान एवं सनातन परम्पराओं को समर्पित एक प्रेरणादायक पहल बताते हुए इसकी सराहना की। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में सेवा, संस्कार, श्रद्धा एवं धर्म के प्रति जागरूकता का संदेश देना रहा।

इस अवसर पर श्री हनुमान चालीसा प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे तथा सभी ने आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई। कार्यक्रम की समस्त व्यवस्थाओं में महेंद्र कुमावत, ताराचंद, प्रभु दयाल, मीनाक्षी, मंजु, आशा, हरीश सहित अनेक कार्यकर्ताओं ने सेवा भाव से अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाईं, जिसके परिणामस्वरूप पूरा आयोजन श्रद्धा, अनुशासन एवं भव्यता के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सवा सौ से अधिक श्रद्धालुओं ने किया सामूहिक रुद्राभिषेक

उदयपुर। श्रावण मास के पावन अवसर पर वरिष्ठ नागरिक ट्रस्ट द्वारा 10 अगस्त को उदयपुर में सामूहिक महारुद्राभिषेक कार्यक्रम श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ आयोजित किया। कार्यक्रम में 125 से अधिक श्रद्धालुओं एवं दंपतियों ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भगवान शिव का रुद्राभिषेक करके पूजा-अर्चना की और सुख-समृद्धि एवं परिवार के मंगल की कामना की।

उस समय पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। कार्यक्रम में मुख्य यजमान श्री हेमंत परिहार एवं श्री अरुण अजमेरा थे।

कार्यक्रम के दौरान श्री डी.पी. धाकड़ द्वारा हृदयघात (हार्ट अटैक) से बचाव एवं सावधानियों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी। जिनमें हार्ट अटैक के प्रमुख कारणों, प्रारंभिक लक्षणों तथा समय रहते बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में अवगत कराया तथा हार्ट किट वितरित किये। सभी श्रद्धालुओं ने सामुहिक भोजन प्रसादी का भी आनन्द लिया।

इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष **श्री हरिशंकर खंडारिया** ने कहा कि श्रावण मास में भगवान शिव का सामूहिक रुद्राभिषेक आध्यात्मिक शांति, सामाजिक एकता एवं धार्मिक चेतना का संदेश देता है। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं, यजमानों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

गंगा सहाय कुमावत का हत्यारा गिरफ्तार

जयपुर के करणी विहार इलाके में सांगानेर ओपन (खुली) जेल के कैदी गंगासहाय कुमावत (45) की सिर में गोली मारकर हत्या कर दी। गंगासहाय अपने धाभास स्थित घर से बाइक से ओपन जेल जा रहा था। इसी दौरान स्कूटी सवार दो बदमाशों ने उस पर तीन गोलियां चलाईं। एक गोली उसके सिर में जाकर लगी।

जयपुर (पश्चिम) डीसीपी प्रशांत किरण ने बताया- धाभास में जानकी विहार इलाके में घटना हुई। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। स्थानीय लोगों की सूचना पर करणी विहार, भांकरोटा और चित्रकूट थानों की पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस जांच में सामने आया है कि गंगासहाय ने साल 2018 में मोती डूंगरी इलाके के हिस्ट्रीशीटर महेंद्र गुर्जर की हत्या की थी। इस मामले में गंगासहाय को सजा हो चुकी थी और वह फिलहाल सांगानेर ओपन जेल में था। बुधवार को जब वह वापस जेल की तरफ जा रहा था, तभी बदमाशों ने उसे निशाना बनाया।

इस हत्याकांड के मास्टर माइंड आयूष दोस्तों को हत्या की सुपारी देकर नेपाल भाग गया था। जैसे वह लौटा पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

पत्नी प्रशंसा दिवस

पत्नी प्रशंसा दिवस (Wife Appreciation Day) हर साल सितंबर के तीसरे रविवार को मनाया जाता है। वर्ष 2026 में यह दिवस 20 सितंबर को है। यह दिन पतियों को अपनी पत्नी के प्यार, समर्थन, और परिवार के लिए किए जाने वाले अनगिनत कार्यों के प्रति आभार व्यक्त करने का एक विशेष अवसर देता है। पत्नी कभी भी ''सिर्फ ठीक-ठाक'' नहीं होती—वह असाधारण होती है।

पत्नी प्रशंसा दिवस उस खास रिश्ते को सम्मान देने का सुंदर अवसर है, जिसमें प्यार, विश्वास, त्याग और समझदारी का गहरा मेल होता है। पत्नी केवल जीवनसाथी ही नहीं होती, बल्कि वह परिवार की खुशियों और भावनाओं को जोड़कर रखने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है। वह अपने परिवार की छोटी-बड़ी जरूरतों का ध्यान रखते हुए कई बार अपनी इच्छाओं को पीछे रख देती है।

एक पत्नी अपने पति की सफलता में उसका साथ देती है, मुश्किल समय में हिम्मत बढ़ाती है और जीवन के उतार-चढ़ाव में एक मजबूत सहारा बनकर खड़ी रहती है। घर की जिम्मेदारियों से लेकर रिश्तों को संभालने तक, उसका योगदान अक्सर शब्दों में व्यक्त करना आसान नहीं होता। उसकी मुस्कान घर में सकारात्मकता भर देती है और उसका अपनापन परिवार को एक साथ जोड़े रखता है।

पत्नी प्रशंसा दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हमें अपने जीवनसाथी के योगदान को केवल इस दिन नहीं, बल्कि हर दिन समझना और उसकी सराहना करनी चाहिए। एक छोटा-सा धन्यवाद, प्यार भरे शब्द, उसकी पसंद का कोई काम करना या कुछ समय सिर्फ उसके साथ बिताना भी उसके चेहरे पर बड़ी मुस्कान ला सकता है।

पत्नी, जीवन का वह खूबसूरत हिस्सा है, जिसके बिना खुशियाँ अधूरी हैं। पत्नी का प्यार, विश्वास और साथ मेरे लिए अनमोल है। जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ आएँ, हर परिस्थिति का सामना करने की ताकत देता है। ये जीवन को सिर्फ बेहतर नहीं बनाती, बल्कि उसे प्रेम और खुशियों से भर देती है। इस पत्नी प्रशंसा दिवस पर दिल से इसे धन्यवाद कहना चाहिये कि हर परिस्थिति में साथ खड़े रहने के लिए, पति की खुशियों को अपनी खुशी समझने के लिए और परिवार को प्यार से सँभालने के लिए।

यह सिर्फ पत्नी नहीं, बल्कि सबसे अच्छी दोस्त, ताकत और जीवन की सबसे खूबसूरत साथी होती है। **पत्नी प्रशंसा दिवस की ढेरों शुभकामनाएँ!**

जीवनसंगिनी कविता

तुम हो तो घर में खुशियों की बहार है,
तुमसे ही रोशन मेरा संसार है।
हर कदम पर देती हो मेरा साथ,
तुमसे ही खूबसूरत मेरी हर बात।
मेरी हँसी में तुम्हारी मुस्कान है,
मेरी हर खुशी में तुम्हारा योगदान है।
मुश्किल राहों में बनती हो सहारा,
तुमने ही सँवारा जीवन हमारा।
कभी माँ बनकर ममता लुटाती हो,
कभी दोस्त बनकर दिल बहलाती हो।
कभी मेरी ताकत, कभी मेरा अभिमान,
तुमसे ही है मेरे जीवन की पहचान।
तुम्हारे त्याग का कोई मोल नहीं,
तुम जैसा अपना कोई और नहीं।
हर दिन तुम्हें धन्यवाद कहूँ, फिर भी कम है,
तुम मेरे जीवन का सबसे खूबसूरत संगम हो।
आज पत्नी प्रशंसा दिवस पर इतना कहना है,
हर जन्म में बस तुम्हारा ही साथ रहना है।
तुम साथ रहो तो हर पल खास है,
तुम ही मेरा प्यार, तुम ही मेरा विश्वास है।

पत्रिका टीम द्वारा संकलित

डोभाल को लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार

राष्ट्रीय सुरक्षा के हर फैसले में डोभाल की अहम भूमिका

पुणे में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि पिछले 12 साल में भारत की रक्षा क्षमताओं में बड़ा बदलाव आया है। उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) अजित डोभाल को इसका अहम योगदानकर्ता बताया।

महाराष्ट्र के पुणे में NSA डोभाल को 2026 का **लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार** देने के बाद शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े हर फैसले के पीछे डोभाल की भूमिका रही है। विदेश नीति मजबूत करने में भी डोभाल का प्रमुख योगदान है। शाह ने कहा कि 2014 में पीएम बनने के बाद मोदी का पहला चयन डोभाल को एनएसए बनाना था।

वहीं, डोभाल ने युवाओं से कहा कि आज के युवा यह समझते हैं कि आजादी का मतलब मनमर्जी है, जबकि आजादी की असली जिम्मेदारी राष्ट्र के लिए काम करना है। उन्होंने कहा कि युवा निजी लाभ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित के लिए समर्पित हों।

''संस्कृत दिवस एवं रक्षाबंधन : ज्ञान, संस्कृति और स्नेह का संगम''

भारत की महान सांस्कृतिक परंपरा में अनेक ऐसे पर्व और दिवस हैं, जो केवल उत्सव तक सीमित नहीं हैं, बल्कि जीवन-मूल्यों, संस्कारों और सामाजिक चेतना का संदेश देते हैं। संस्कृत दिवस एवं रक्षाबंधन इसी दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एक ओर संस्कृत दिवस हमें अपनी ज्ञान-परंपरा, संस्कृति और गौरवशाली विरासत से जोड़ता है, वहीं रक्षाबंधन भाई-बहन के पवित्र प्रेम, विश्वास, कर्तव्य और पारिवारिक स्नेह का प्रतीक है। जब ये दोनों अवसर एक साथ आते हैं तो यह आयोजन ज्ञान, संस्कृति और स्नेह के अद्भुत संगम का रूप ले लेता है।

संस्कृत : भारतीय ज्ञान परंपरा की आधारशिला — संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की हजारों वर्षों पुरानी ज्ञान-परंपरा की संवाहिका है। वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, महाभारत, दर्शन, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य और अनेक शास्त्रों का विशाल ज्ञान संस्कृत भाषा में उपलब्ध है। संस्कृत ने भारतीय चिंतन को शब्द दिए और हमारी संस्कृति, परंपराओं तथा जीवन-दर्शन को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संस्कृत दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह समाज की स्मृति और संस्कृति की पहचान भी होती है। संस्कृत के शब्दों में भारतीय जीवन-दृष्टि, प्रकृति के प्रति सम्मान, परिवार के प्रति कर्तव्य, गुरु के प्रति श्रद्धा और समस्त प्राणियों के प्रति करुणा का भाव दिखाई देता है।

संस्कृत का प्रसिद्ध वाक्य है— ''**सत्यमेव जयते**'' अर्थात सत्य की ही विजय होती है। इसी प्रकार—''**वसुधैव कुटुम्बकम्**'' का संदेश संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की उदात्त भावना प्रदान करता है। ये केवल वाक्य नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के जीवन-मूल्य हैं।

रक्षाबंधन : प्रेम और विश्वास का पवित्र पर्व— रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत आत्मीय पर्व है। इस दिन बहन अपने भाई की कलाई पर रक्षा-सूत्र बाँधती है और भाई बहन के प्रति प्रेम, सम्मान तथा उसके सुख-दु:ख में साथ रहने का संकल्प व्यक्त करता है। आधुनिक समय में रक्षाबंधन का अर्थ केवल भाई द्वारा बहन की रक्षा करने तक सीमित नहीं है। यह पर्व परस्पर सम्मान, सहयोग, विश्वास और स्नेह का प्रतीक बन चुका है।

रक्षा-सूत्र बाँधते समय परंपरागत रूप से कहा जाता है—

''येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥''

यह मंत्र रक्षा-सूत्र के माध्यम से सुरक्षा और मंगल की कामना करता है। इसके पीछे मूल भावना यही है कि जीवन में हम अपने प्रियजनों के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें और आवश्यकता के समय एक-दूसरे का सहारा बनें। रक्षाबंधन हमें परिवार की शक्ति और संबंधों की गरिमा का अनुभव कराता है। भाई-बहन का रिश्ता केवल रक्त का संबंध नहीं, बल्कि बचपन की स्मृतियों, विश्वास, अपनत्व और भावनात्मक सहयोग का रिश्ता है।

संस्कृत और रक्षाबंधन का अद्भुत संबंध — संस्कृत दिवस और रक्षाबंधन को साथ देखने पर भारतीय संस्कृति की एक विशेष सुंदरता सामने आती है। संस्कृत हमें ज्ञान और संस्कार देती है, जबकि रक्षाबंधन हमें स्नेह और कर्तव्य का पाठ पढ़ाता है। संस्कृत हमारे विचारों को समृद्ध करती है और रक्षाबंधन हमारे संबंधों को मजबूत करता है। संस्कृत साहित्य में परिवार, गुरु-शिष्य संबंध, भाई-बहन का स्नेह, मातृ-पितृ भक्ति और सामाजिक कर्तव्यों का व्यापक वर्णन मिलता है। संस्कृत के माध्यम से हम उन मूल्यों को समझ सकते हैं, जिन पर भारतीय परिवार व्यवस्था और सामाजिक जीवन की मजबूत नींव रखी गई है। इस प्रकार संस्कृत दिवस और रक्षाबंधन का संयुक्त आयोजन केवल दो अवसरों का उत्सव नहीं, बल्कि ज्ञान और संबंधों को जोड़ने का प्रयास है।

संस्कृत दिवस : नई पीढ़ी से संवाद — आज के डिजिटल युग में नई पीढ़ी अनेक भाषाओं और संस्कृतियों से परिचित हो रही है। यह अच्छी बात है, लेकिन अपनी मातृभूमि की सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ना भी उतना ही आवश्यक है। संस्कृत दिवस विद्यार्थियों को अपनी विरासत से परिचित कराने का सुंदर अवसर प्रदान करता है। विद्यालयों में संस्कृत दिवस के अवसर पर श्लोक-पाठ, संस्कृत संभाषण, नाटक, गीत, प्रश्नोत्तरी, निबंध प्रतियोगिता और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। इससे विद्यार्थियों में संस्कृत के प्रति रुचि उत्पन्न होती है और उन्हें यह अनुभव होता है कि संस्कृत केवल पुस्तकों तक सीमित भाषा नहीं, बल्कि आज भी जीवन में उपयोगी और जीवंत भाषा है।

रक्षाबंधन का सामाजिक संदेश — रक्षाबंधन का संदेश परिवार से आगे बढ़कर पूरे समाज तक जाता है। रक्षा का अर्थ केवल शारीरिक सुरक्षा नहीं है। हमें प्रकृति की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, संस्कृति की रक्षा और समाज में कमजोर वर्गों के सम्मान

एवं सहयोग का संकल्प भी लेना चाहिए। आज आवश्यकता है कि रक्षाबंधन के अवसर पर हम पेड़-पौधों, जल-स्रोतों, पशु-पक्षियों और पर्यावरण की रक्षा का संकल्प लें। विद्यालयों में विद्यार्थी एक-दूसरे को रक्षा-सूत्र बाँधने के साथ ''प्रकृति रक्षा'' का संकल्प भी ले सकते हैं। इससे पर्व की भावना व्यापक सामाजिक सरोकार से जुड़ती है।

संस्कारों की शिक्षा — संस्कृत और रक्षाबंधन दोनों का सबसे बड़ा योगदान संस्कार निर्माण में है। संस्कृत के श्लोकों में सत्य, अहिंसा, दया, त्याग, सेवा, परोपकार और अनुशासन जैसे जीवन-मूल्यों की शिक्षा मिलती है। रक्षाबंधन प्रेम, विश्वास, त्याग और कर्तव्य का संदेश देता है।यदि विद्यार्थी इन मूल्यों को अपने जीवन में उतारते हैं तो शिक्षा केवल परीक्षा में अंक प्राप्त करने का साधन नहीं रहती, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण का माध्यम बन जाती है। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है।

आधुनिक समय में प्रासंगिकता — आज जब परिवारों में व्यस्तता बढ़ रही है और डिजिटल माध्यमों के कारण लोगों के बीच प्रत्यक्ष संवाद कम हो रहा है, तब ऐसे पर्व संबंधों में आत्मीयता और अपनत्व बढ़ाने का अवसर देते हैं। रक्षाबंधन परिवार को एक साथ लाता है और संस्कृत दिवस हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों की ओर लौटने का अवसर प्रदान करता है।दोनों अवसर हमें यह संदेश देते हैं कि आधुनिकता को अपनाते हुए भी अपनी संस्कृति और मूल्यों को नहीं भूलना चाहिए। आधुनिक तकनीक हमारे जीवन को सुविधाजनक बना सकती है, लेकिन परिवार, संस्कार, भाषा और संस्कृति ही हमारे व्यक्तित्व को वास्तविक पहचान प्रदान करते हैं।

निष्कर्ष — ''संस्कृत दिवस एवं रक्षाबंधन : ज्ञान, संस्कृति और स्नेह का संगम'' वास्तव में भारतीय जीवन-दर्शन की व्यापकता को अभिव्यक्त करने वाला विषय है। संस्कृत हमें अपनी ज्ञान-परंपरा से जोड़ती है, जबकि रक्षाबंधन हमें अपने संबंधों की गरिमा का बोध कराता है। संस्कृत से हमें विचारों की शक्ति मिलती है और रक्षाबंधन से भावनाओं की ऊष्मा। आज आवश्यकता है कि हम इन दोनों अवसरों को केवल औपचारिक रूप से न मनाकर इनके मूल संदेश को अपने जीवन में उतारें। संस्कृत के ज्ञान को आगे बढ़ाएँ, अपनी संस्कृति का संरक्षण करें, परिवार में प्रेम और सम्मान बढ़ाएँ तथा समाज और प्रकृति के प्रति अपने दायित्वों को समझें।

अंततः यही कहा जा सकता है—

संस्कृतं ज्ञानसम्पन्नं, रक्षाबन्धनं प्रेममयम्।
उभयं भारतीयं तेजः, संस्काराणां च संगमम्॥

अर्थात संस्कृत ज्ञान से परिपूर्ण है और रक्षाबंधन प्रेम से ओत-प्रोत है। दोनों मिलकर भारतीय संस्कृति के तेज और संस्कारों के सुंदर संगम को प्रस्तुत करते हैं। यही हमारी परंपरा की शक्ति है और यही हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य विरासत है।

अतः संस्कृत दिवस का सार यही है—

''**संस्कृतस्य संरक्षणं, संवर्धनं च अस्माकं सांस्कृतिकं दायित्वम्।**'' अर्थात्—संस्कृत का संरक्षण और संवर्धन हमारा सांस्कृतिक दायित्व है।

डॉ.परमेश्वर प्रसाद माण्डेला, राज्य पुरस्कृत शिक्षक
सांगरिया (भीलवाड़ा), मो.न. 9829321742

रेकी : ऊर्जा, शांति और आत्म-संतुलन की साधना

आज का जीवन तनाव, व्यस्तता और मानसिक दबाव से भरा हुआ है। ऐसे समय में मनुष्य अपने शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन की भी तलाश करता है। रेकी इसी दिशा में एक जापानी ऊर्जा-आधारित पद्धति है।

'रेकी' दो जापानी शब्दों से मिलकर बना है – 'रेई', जिसका अर्थ सार्वभौमिक और, 'की', जिसका अर्थ जीवन-ऊर्जा माना जाता है। इस पद्धति में प्रशिक्षित साधक हाथों को शरीर के विभिन्न भागों के ऊपर अथवा हल्के स्पर्श के साथ रखकर व्यक्ति को विश्राम और शांति का अनुभव कराने का प्रयास करता है।

रेकी में ध्यान, सकारात्मक संकल्प तथा ऊर्जा-केंद्रों अर्थात् चक्रों पर भी ध्यान दिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव अलग हो सकता है। कुछ लोगों को सत्र के दौरान शांति, हल्कापन अथवा मानसिक विश्राम का अनुभव होता है।

रेकी को आधुनिक चिकित्सा का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए। किसी भी बीमारी की स्थिति में चिकित्सकीय परामर्श आवश्यक है। इसे चिकित्सा की पूरक पद्धति तथा मानसिक विश्राम और आत्म-जागरूकता के अभ्यास के रूप में देखा जा सकता है।

आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में कुछ समय स्वयं के लिए निकालना भी एक प्रकार की साधना है। रेकी हमें अपने भीतर की शांति से जुड़ने और सकारात्मक जीवन की ओर बढ़ने का अवसर प्रदान कर सकती है।

- शोभिका कुमावत
रेकी ग्रैंड मास्टर हीलर एवं टैरो कार्ड रीडर

जन्माष्टमी: आधी रात को जन्म लेने वाले कृष्ण की कहानी और उसका अर्थ

भारत में कुछ त्योहार केवल कैलेंडर की तारीख नहीं होते। वे मौसम की तरह आते हैं—धीरे-धीरे घरों में उतरते हैं, बाजारों का रंग बदलते हैं, मंदिरों में घंटियाँ कुछ अधिक देर तक बजती हैं और बचपन की कुछ भूली हुई स्मृतियाँ अचानक लौट आती हैं। **जन्माष्टमी** भी ऐसा ही पर्व है।

भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की अष्टमी आते ही देश के अलग-अलग हिस्सों में कृष्ण की प्रतीक्षा शुरू हो जाती है। कहीं घरों में बाल गोपाल के लिए झूला सजाया जाता है कहीं छोटी-सी मटकी में माखन रखा जाता है, कहीं मंदिरों में झाँकियाँ बनती हैं और कहीं बच्चे कृष्ण और राधा का रूप धरकर पूरे मोहल्ले को अपने खेल में शामिल कर लेते हैं। लेकिन इस उत्सव का सबसे सुंदर हिस्सा शायद वह इंतज़ार है जो आधी रात तक चलता है। रात के बारह बजने का इंतज़ार! घड़ी की सुइयाँ जैसे-जैसे आगे बढ़ती हैं, मंदिर में भीड़ बढ़ती जाती है। भजन तेज होने लगते हैं, घंटे और शंख बजते हैं, और ठीक मध्यरात्रि में जब कृष्ण जन्म का क्षण आत है, तो वातावरण में एक साथ जयकार उठती है—**''नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की।''** उस क्षण कोई यह नहीं सोचता कि हजारों वर्ष पहले की एक घटना आज तक इतनी जीवित कैसे है। हम बस उसे जीते हैं।

कृष्ण के जन्म की कथा जितनी प्रसिद्ध है, उतनी ही अर्थपूर्ण भी। मथुरा में कंस का अत्याचार था। देवकी और वसुदेव कारागार में थे। भविष्यवाणी हो चुकी थी कि देवकी का आठवाँ पुत्र कंस के अंत का कारण बनेगा। भयभीत कंस ने देवकी की संतानों को एक-एक करके मार डाला। और फिर वही रात आई, जिसे आज हम जन्माष्टमी के रूप में याद करते हैं। परंपरा के अनुसार, भाद्रपद कृष्ण अष्टमी की मध्यरात्रि में कृष्ण का जन्म हुआ।

यहाँ एक बात मुझे हमेशा आकर्षित करती है। कृष्ण का जन्म प्रकाश में नहीं, अँधेरे में हुआ। न महल में उत्सव था, न राजसी संगीत, न फूलों से सजा कोई सिंहासन। एक कारागार था, पहरे थे और मृत्यु का भय था। शायद इसीलिए कृष्ण की कथा का पहला अर्थ ही यह है कि जीवन में परिस्थितियाँ अनुकूल होने की प्रतीक्षा मत कीजिए। कभी-कभी सबसे कठिन समय ही किसी नए आरंभ का समय होता है।

वसुदेव कृष्ण को लेकर यमुना पार करते हैं और उन्हें गोकुल पहुँचा देते हैं। वहीं से कृष्ण का दूसरा जीवन शुरू होता है—राजकुमार के रूप में नहीं, बल्कि नंद-यशोदा के घर पले उस चंचल बालक के रूप में, जिसकी पहचान मुकुट से कम और मोरपंख, बाँसुरी और शरारतों से अधिक बनी। और यहीं कृष्ण दूसरे देवताओं से अलग दिखाई देने लगते हैं। वह केवल पूजे जाने वाले देवता नहीं हैं। वह जीए जाने वाले चरित्र हैं।

भारत में जन्माष्टमी का स्वरूप हर जगह एक जैसा नहीं है। मथुरा और वृंदावन में यह केवल घर का त्योहार नहीं रहता। पूरा ब्रज कृष्णमय हो जाता है। मंदिरों में विशेष सजावट होती है, झाँकियाँ सजती हैं, भजन-कीर्तन होते हैं और कृष्ण जन्म के समय विशेष पूजा की जाती है।

कई परिवारों में लोग व्रत रखते हैं और रात में कृष्ण जन्म के बाद व्रत खोलते हैं। घरों में बाल गोपाल को स्नान कराया जाता है, नए वस्त्र पहनाए जाते हैं, मुकुट और आभूषण सजाए जाते हैं और उन्हें पालने में झुलाया जाता है। बच्चों के लिए तो जन्माष्टमी अपने आप में एक अलग संसार है। किसी को कृष्ण बनना है, किसी को राधा। कि—मानो स्वयं कृष्ण घर के भीतर चले आए हों।

और फिर आती है **दही-हांडी**। विशेषकर महाराष्ट्र में जन्माष्टमी का यह रूप देखने लायक होता है। ऊँचाई पर बंधी मटकी, उसके नीचे मानव-पिरामिड बनाते युवा, आसपास खड़ी भीड़ और ऊपर तक पहुँचने की कोशिश करता हुआ आखिरी युवक। यह केवल मटकी फोड़ने का खेल नहीं है। कम-से-कम इसकी कल्पना में तो यह सामूहिकता का उत्सव है।

एक व्यक्ति अकेले मटकी तक नहीं पहुँच सकता। किसी को नीचे मजबूती से खड़ा होना है, किसी को उसके कंधे पर चढ़ना है, किसी को संतुलन बनाए रखना है और किसी को सबसे ऊपर जाकर मटकी तक पहुँचना है। कृष्ण की बाल-लीलाओं से निकला यह उत्सव अनजाने में जीवन का एक बड़ा सच कह देता है—ऊपर पहुँचने वाले व्यक्ति को भी नीचे खड़े लोगों की जरूरत होती है। आज की दुनिया में, जहाँ सफलता को अक्सर केवल व्यक्तिगत उपलब्धि मान लिया गया है, यह छोटी-सी बात बहुत बड़ी है।

कृष्ण से आखिर सीखें क्या ?

कृष्ण की सबसे बड़ी विशेषता शायद यही है कि उनके जीवन से एक नहीं, अनेक पाठ निकलते हैं। पहला—परिस्थितियों से बड़ा आपका कर्म है। कृष्ण का जन्म जेल में हुआ, बचपन खतरे में बीता, मथुरा छोड़नी पड़ी, जीवन में युद्ध आया, राजनीति आई और रिश्तों की जटिलताएँ आईं। लेकिन कृष्ण ने परिस्थितियों को अपने व्यक्तित्व की सीमा नहीं बनने दिया। आज हम अक्सर अपनी परिस्थितियों को अपनी असफलताओं का कारण बना लेते हैं। कृष्ण की कथा इससे उलट खड़ी है। परिस्थिति आपकी शुरुआत तय कर सकती है, अंत नहीं।

—हर जगह युद्ध तलवार से नहीं लड़ा जाता। कृष्ण योद्धा

होने से अधिक रणनीतिकार हैं। महाभारत में उनकी सबसे बड़ी शक्ति उनका शस्त्र नहीं, उनकी दृष्टि है। उन्होंने अर्जुन को युद्ध करने के लिए केवल उकसाया नहीं; उन्होंने उसके भीतर के भ्रम को तोड़ा। यही गीता का मूल संकट है—बाहर युद्ध से पहले भीतर का युद्ध। हमारे जीवन में भी यही होता है। नौकरी का निर्णय हो, संबंधों का संकट हो, परिवार की जिम्मेदारी हो या कोई कठिन फैसला—कई बार समस्या बाहर कम और हमारे भीतर अधिक होती है। कृष्ण शायद सबसे पहले वहीं खड़े दिखाई देते हैं।

—जीवन को केवल गंभीरता से जीना भी एक भूल है। यह बात आधुनिक मनुष्य को शायद सबसे अधिक याद रखने की जरूरत है। **कृष्ण की छवि में बाँसुरी भी है, माखन भी है, हँसी भी है, प्रेम भी है, नृत्य भी है और युद्ध भी।** अर्थात जीवन केवल जिम्मेदारियों का बोझ नहीं है। कृष्ण हमें बताते हैं कि गंभीर होना और जीवन को गंभीरता से लेना दो अलग बातें हैं। कर्तव्य निभाइए, लेकिन मुस्कुराना मत भूलिए।

—संबंध अधिकार से नहीं, उपस्थिति से बनते हैं। कृष्ण का जीवन रिश्तों से भरा हुआ है—माँ यशोदा, नंद, सखा, राधा, गोपियाँ, अर्जुन, द्रौपदी और असंख्य पात्र। इन संबंधों में कृष्ण का एक रूप स्थायी दिखाई देता है—वे सामने वाले के जीवन में उपस्थित रहते हैं। आज हमारे पास संपर्क के साधन पहले से अधिक हैं, लेकिन संबंधों में उपस्थिति शायद कम होती जा रही है। हम संदेश भेजते हैं, लेकिन समय नहीं देते। शायद कृष्ण की बाँसुरी से अधिक हमें उनकी उपस्थिति सीखनी चाहिए।

कृष्ण केवल देवता के रूप में पैदा नहीं होते। वे किसी के घर के लड्डू गोपाल बनकर आते हैं, किसी माँ की गोद में आते हैं, किसी बच्चे की पोशाक में आते हैं, किसी मंदिर की झाँकी में आते हैं, किसी दही-हांडी की मटकी में आते हैं और शायद किसी ऐसे आदमी के भीतर भी, जो जीवन से हारकर बैठा है और अचानक यह याद करता है कि—अँधेरा चाहे आधी रात का ही क्यों न हो, कहानी वहीं समाप्त नहीं होती।

कृष्ण का जन्म आधी रात को हुआ था। इसलिए शायद जन्माष्टमी हमें केवल यह याद नहीं दिलाती कि कृष्ण कब जन्मे थे। वह हमें यह भी याद दिलाती है कि सबसे अँधेरे समय में भी जन्म की संभावना बची रहती है। बस फर्क इतना है—मथुरा के कारागार में उस रात कृष्ण ने जन्म लिया था, और हमारे भीतर कृष्ण कब जन्म लेंगे, यह निर्णय हमें स्वयं करना है। **- सीमा कुमावत**

रागी-एक सुपर फूड

रागी में कैल्शियम की बहुलता होती है, इसका सेवन हमारी हड्डियों और दांतों को मजबूत बनाता है। इसमें दूध से भी ज्यादा मात्रा में कैल्शियम तो होता ही है साथ में इसमें फाइबर भी प्रचूर मात्रा में होता है। इसका सेवन विभिन्न तरह से किया जा सकता है।

रोटी व पराठा : रागी के आटो को गेहूं के आटे के साथ मिलाकर रोटी व राठा बनाने पर यह शरीर में कैल्शियम की कमी तो दूर करता ही है साथ ही स्वादिष्ट भी लगता है।

इडली व डोसा : रागी के आटे से इडली व डोसा बनाये, पाचन को आसान करता है तथा बच्चों व बड़ों को अच्छा भी लगता है।

लड्डू : रागी के आटे में गुड व घीमिलाकर लड्डू बनाये जाये तो शरीर को भरपूर ऊर्जा देता है तथा हड्डियाँ व दांत मजबूत होते हैं।

बिस्कुट व स्नैक्स : रागी के आटे से बिस्कुट व स्नेक्स बनाकर खाये यह बच्चों व बड़ों के लिए हेल्दी स्वादिष्ट होंगे।

दलिया : रागी से बना दलिये में दूध एवं ड्राइफ्रूट्स डालकर नाश्ते में लेवें, यह एनर्जी भी देगा। इससे कैल्शियम व फाइबर की कमी भी दूर होगी।

स्मूदी व डिंक्स : रागी से स्मूदी व अन्य ड्रिंक्स बनाकर उसमें फलों का पल्प तथा ड्राईफुट्स मिलाकर ठण्डा करके पीया जा सकता है। यह हेल्दी डिंक्स बड़े ही चाव से सभी लोग लेंगे।

आइये क्यों न सुपर फूड रागी को प्रतिदिन की डाईट में शामिल कर स्वयं एवं परिवार को स्वस्थ रखें।

अकिंचन महाराज द्वारा जगन्नाथपुरी में श्री मद्भागवत कथा होगी

श्री मुरली मनोहर अकिंचन महाराज द्वारा सनातन के पवित्र स्थलों पर कथाएं की जाती है। इस क्रम में इस बार जगन्नाथपुरी में श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन 17 से 23 दिसंबर 2026 तक किया जायेगा।

इसमें भोजन, आवास एवं कथा व्यवस्था हेतु सहयोग राशि (प्रति व्यक्ति) निम्न प्रकार है- 2 बेड - 13,500/- (प्रति व्यक्ति), 3 बेड - 12,500/- (प्रति व्यक्ति), 4 बेड - 12,000/- (प्रति व्यक्ति)

अग्रिम बुकिंग राशि - 6,000/- (प्रति व्यक्ति, NON-REFUNDABLE) होगी।

अग्रिम राशि जमा करवाने हेतु (1) नकद, (2) बैंक अकाउंट विवरण: मुरली मनोहर अकिंन, खाता नं. 38247012946

IFSC SBIN0031795, S.B.I.बैंक

सूरज नगर, सिविल लाइंस, जयपुर (3)-GPAY A/C No. 8385058568

विशेष - बैंक अकाउंट / GPAY A/C नंबर में राशि जमा करवा कर स्क्रीन शॉट वाट्सएप पर अवश्य भेजनी होगी।

-**हरिनाम संकीर्तन परिवार,** कृष्ण स्वरूप बूब 9828015993

प्रतिभावान व्यक्तित्व गायत्री वर्मा

गायत्री वर्मा, पिछले लगभग 20 वर्षों से ज्योतिष एवं आध्यात्मिक परामर्श के क्षेत्र में समर्पित रूप से कार्यरत है। इन्होंने मुंबई विश्व ज्योतिष संस्थान से वैदिक ज्योतिष का विधिवत अध्ययन एवं प्रशिक्षण प्राप्त किया है। पिछले 15 वर्षों से जयपुर में रहकर देश-विदेश के अनेक लोगों को सफलतापूर्वक मार्गदर्शन प्रदान कर रही है। वर्तमान में ये AstroTalk पर भी प्रोफेशनल एस्ट्रोलॉजर के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही है।

इनकी विशेषज्ञता वैदिक ज्योतिष, वास्तु शास्त्र, टैरो कार्ड रीडिंग, न्यूमेरोलॉजी, फेस रीडिंग, लाइफ कोचिंग एवं काउंसलिंग में है। इनका उद्देश्य केवल भविष्य की संभावनाओं का आकलन करना नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का समाधान, सही दिशा और आत्मविश्वास प्रदान करना है।

इनसे विवाह एवं वैवाहिक जीवन, प्रेम संबंध, करियर, नौकरी, व्यवसाय, आर्थिक उन्नति, शिक्षा, संतान, स्वास्थ्य, पारिवारिक समस्याएँ, गृह-वास्तु एवं व्यक्तिगत विकास से संबंधित विषयों पर परामर्श प्राप्त किया जा सकता है। इनके द्वारा सुझाए गए उपाय सरल, व्यवहारिक एवं जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाले होते हैं।

इनका विश्वास है कि सही मार्गदर्शन, सकारात्मक सोच, आध्यात्मिक ज्ञान और ईश्वर की कृपा से प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और सफलता प्राप्त कर सकता है। इसी विश्वास के साथ मैं प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आशा, आत्मविश्वास और नई दिशा प्रदान करने का निरंतर प्रयास करती है। इनका संकल्प है सेवा।

रवि टम्टा ने बनाई उड़ने वाली कार

उत्तराखंड के अल्मोड़ा रवि टम्टा नेका रहने वाला इनोवेटर रवि टम्टा ने HAPIDA SKYNeX का सफलतापूर्वक टेस्ट-फ्लाई किया है। ये एक सिंगल-सीटर इलेक्ट्रिक फ्लाइंग व्हीकल प्रोटोटाइप है। यह 20 फुट की ऊंचाई तक उडी है। इसकी सफलता से ऐसी उम्मीद जताई जा रही है कि यह एक दिन भारत में पर्सनल ट्रांसपोर्टेशन बन जाएगा। रवि ने बताया कि उनको अपने गांव से 40 किलोमीटर की दूरी सड़क मार्ग से तय करने में लगभग 90 मिनट (डेढ़ घंटा) का समय लगता है। रवि के इस कारनामे ने इंटरनेट पर धूम मचा दी है। मुख्य मंत्री धामी ने भी इसकी तारीफ की है।

गगन कुमार कुमावत पुत्र श्री महेंद्र कुमार कुमावत (जेठीवाल) पोत्र श्री सुखदेव प्रसाद जेठीवाल कुमावत मोहल्ला, काकड़ वाली ढाणी, किशनगढ़-रेनवाल का NEET 2026 में All India Rank 21834 के साथ शानदार सफलता प्राप्त करने पर कुमावत इंडिया पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाए।

अदिति कुमावत ने NEET (UG) 2026 परीक्षा में 585/720 अंक, (99.20 %) तथा ऑल इंडिया रैंक (AIR) 15762 हासिल की है। 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएँ!

शारदा कुमावत को NEET परीक्षा में शानदार सफलता पर एवं सरकारी मेडिकल कॉलेज में चयन होने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

अनुष्का नोखवाल ने NEET (UG) 2026 परीक्षा में 591/720 अंक तथा ऑल इंडिया रैंक (AIR) 13265 हासिल की है। बधाई

साक्षी चान्दौरा पुत्री देवाराम जी NEET (UG) 2026 परीक्षा में 16523 रैंक हासिल की है। बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ!

आशा कुमावत को NAM परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए Ayush Nursing Officer पद पर 144वीं रैंक प्राप्त कर चयनित होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

इनकी यह उपलब्धि आपके कठिन परिश्रम, लगन और समर्पण का शानदार परिणाम है। इससे पूरे कुमावत समाज का गौरव बढ़ा है। बधाई।

डॉ. तनुश्री कुमावत (BHMS), रिंगस को चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में समर्पण, सेवा भावना और उत्कृष्ट कार्यों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. अजय कुमावत पुत्र श्री दुर्गालाल कुमावत, निवासी केकड़ी, अजमेर का AIIMS, New Delhi में PG (कार्डियोलॉजी) हेतु चयन होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

दिव्यांजलि कुमावत प्राकृतिक चिकित्साधिकारी पद पर चयनित

तारपुरा गांव की दिव्यांजलि कुमावत, पुत्री श्री नेमीचंद कुमावत ने अपनी मेहनत, लगन और उत्कृष्ट प्रतिभा के दम पर योग एवं प्राकृतिक चिकित्साधिकारी पद पर चयनित होकर राजस्थान में 86वीं रैंक प्राप्त की है। इनकी यह उपलब्धि पूरे कुमावत समाज के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है। जो कुमावत समाज के युवाओं को अपने सपनों को साकार करने की प्रेरणा देगी

दिव्यांजलि कुमावत को इस शानदार सफलता पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

डॉक्टर निर्मला कुमावत ने हेदर गंज, अयोध्या में ड्यूटी ज्वाइन की है। बहुत-बहुत बधाई।

श्री दुर्गेश कुमार, कृषि अनुसंधान अधिकारी को स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त 2026 के अवसर पर 'श्रेष्ठ कार्मिक' के रूप में पुरस्कृत किए जाने पर हार्दिक बधाई।

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता प्रकोष्ठ में भीलवाड़ा के **डॉ. रणवीर कुमावत** को प्रदेश सचिव नियुक्त किया गया है। बहुत-बहुत बधाई।

सुश्री सोनाली दत्तु बेताडे को उप महापौर, सताना नगर परिषद की उपनगराध्यक्ष नियुक्त किये जाने पर हार्दिक बधाई!

खाजूवाला की अंजू जलन्धरा पुत्री **श्री इंद्राज जलन्धरा** का सहायक कृषि अभियन्ता राजस्थान में तीसरी रैंक प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सहायक आचार्य (संस्कृत) परीक्षा में उषा ने टॉप किया

अणतपुरा की बेटी ऊषा कुमावत ने दूसरे प्रयास में राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सहायक **आचार्य संस्कृत** परीक्षा में **प्रथम रैंक** अर्जित कर इतिहास रच दिया व डॉक्टर बनी। यह हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से इन्हें हार्दिक बधाई।

मीनू प्रकाश कुमावत CA बनी

चार्टर्ड अकाउंटेंसी जैसी प्रतिष्ठित एवं कठिन परीक्षा में शानदार सफलता प्राप्त करने पर मीनू प्रकाश कुमावत को हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

इस परीक्षा में सफलता प्राप्त करना मेहनत, समर्पण, अनुशासन और आत्मविश्वास का उत्कृष्ट प्रमाण है। इनकी यह उपलब्धि पूरे कुमावत समाज के युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

श्री जयंत कुमावत पुत्र स्व. श्री सत्यनारायण कुमावत के सुपुत्र को कॉलेज असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में चयनित होने पर **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

श्री गणेश कुमावत मंडालिया (शिव) को भीमराभाई भील राजकीय महाविद्यालय, सागवाड़ा, डूंगरपुर में असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र) के पद पर नियुक्त होने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

ज्योतिष और पितृदोष

सनातन परंपरा, कर्म और समाधान का आध्यात्मिक विश्लेषण

भारतीय सनातन संस्कृति में ज्योतिष केवल ग्रह-नक्षत्रों की गणना का विज्ञान नहीं, बल्कि मानव जीवन के सूक्ष्म कर्मों और उनके प्रभावों को समझने का दिव्य माध्यम माना गया है। हमारे ऋषि-मुनियों ने ज्योतिष को वेदों का नेत्र कहा है, क्योंकि यह जीवन में आने वाले सुख-दु:ख, बाधाओं और संभावनाओं का पूर्व संकेत प्रदान करता है। इन्हीं महत्वपूर्ण विषयों में एक अत्यंत चर्चित और संवेदनशील विषय है — पितृदोष।

पितृदोष क्या है ? : सनातन धर्म में ''पितृ'' शब्द हमारे पूर्वजों, माता-पिता एवं कुल के दिवंगत सदस्यों के लिए प्रयोग किया जाता है। जब किसी कारणवश पूर्वजों की आत्मा असंतुष्ट रह जाती है, अथवा उनके प्रति कर्तव्यों का उचित पालन नहीं हो पाता, तब उनके अशुभ प्रभाव को ज्योतिष में पितृदोष कहा जाता है।

यह दोष केवल किसी व्यक्ति के कर्मों का परिणाम नहीं होता, बल्कि कई बार यह कुल परंपरा, पूर्वजों के अधूरे कार्य, श्राद्ध कर्म की उपेक्षा, या पारिवारिक धर्म से विमुख होने के कारण भी उत्पन्न माना जाता है।

ज्योतिष में पितृदोष के संकेत : वैदिक ज्योतिष में पितृदोष का विश्लेषण मुख्य रूप से जन्मकुंडली के नवम भाव, सूर्य, राहु तथा शनि की स्थिति से किया जाता है। विशेष रूप से जब सूर्य और राहु का संबंध बनता है, अथवा नवम भाव पीड़ित होता है, तब पितृदोष की संभावना मानी जाती है।

कुछ सामान्य संकेत इस प्रकार हो सकते हैं—

■ परिवार में बार-बार असामयिक मृत्यु या दुर्घटनाएँ ■ विवाह में अत्यधिक विलंब ■ संतान प्राप्ति में बाधा ■ घर में निरंतर अशांति ■ बनते कार्यों का अचानक रुक जाना ■ आर्थिक संकट और मानसिक तनाव ■ बार-बार रोग या अनिद्रा की समस्या

हालाँकि केवल एक योग देखकर निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होता। अनुभवी ज्योतिषाचार्य सम्पूर्ण कुंडली का सूक्ष्म अध्ययन करके ही निर्णय देते हैं।

क्या पितृदोष भय का विषय है ? : पितृदोष कोई अभिशाप नहीं, बल्कि पूर्वजों के प्रति कर्तव्य और स्मरण का संकेत माना जाना चाहिए। ज्योतिष हमें यह सिखाता है कि प्रत्येक दोष का निवारण श्रद्धा, सेवा, दान और सद्कर्मों से संभव है। इसलिए भयभीत होने के बजाय उचित मार्गदर्शन और सकारात्मक उपाय अपनाना आवश्यक है।

पितृदोष के पारंपरिक उपाय : सनातन शास्त्रों में पितृशांति के अनेक उपाय बताए गए हैं। इनमें प्रमुख हैं— ■ पितृपक्ष में श्राद्ध एवं तर्पण करना ■ अमावस्या पर पितरों का स्मरण और दान ■ पीपल वृक्ष की सेवा एवं जल अर्पण ■ गौ, कुत्ते, कौवे और जरूरतमंदों को भोजन कराना ■ भगवद्गीता एवं गरुड़ पुराण का पाठ ■ महामृत्युंजय मंत्र एवं गायत्री मंत्र का जप ■ योग्य विद्वान ब्राह्मण द्वारा पितृशांति अनुष्ठान

इन उपायों का मूल उद्देश्य केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और सकारात्मक ऊर्जा का संचार है।

निष्कर्ष

ज्योतिष और पितृदोष का संबंध केवल ग्रहों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, परिवार और कर्म परंपरा से जुड़ा गहन आध्यात्मिक विषय है। यदि जीवन में निरंतर बाधाएँ उत्पन्न हो रही हों, तो घबराने के बजाय अनुभवी विद्वान से उचित परामर्श लेकर सकारात्मक उपाय अपनाने चाहिए।

पूर्वज हमारे अस्तित्व की जड़ हैं। जब हम उनका सम्मान, स्मरण और कर्तव्य पालन करते हैं, तब जीवन में स्थिरता, शांति और उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। यही सनातन धर्म और ज्योतिष का वास्तविक संदेश है।

पितृदोष के प्रमुख ज्योतिषीय योग : वैदिक ज्योतिष में पितृदोष का निर्धारण मुख्यत: नवम भाव, सूर्य, राहु, शनि और गुरु की स्थिति से किया जाता है। कुछ प्रमुख योग इस प्रकार हैं—

1. सूर्य-राहु ग्रहण योग : जब जन्मकुंडली में सूर्य और राहु एक साथ स्थित हों, तब ग्रहण योग बनता है। यह पितृदोष का सबसे प्रमुख संकेत माना जाता है।

संभावित प्रभाव: पिता से मतभेद, सम्मान में बाधा, सरकारी कार्यों में रुकावट, मानसिक तनाव और अस्थिरता

2. नवम भाव में राहु या केतु : नवम भाव धर्म, भाग्य और पितरों का भाव माना जाता है।

यदि इस भाव में राहु या केतु स्थित हों अथवा पाप ग्रहों की दृष्टि हो, तो पितृदोष की संभावना बढ़ जाती है।

संभावित प्रभाव: भाग्य का देर से साथ देना, जीवन में संघर्ष अधिक होना, पारिवारिक अशांति, कुल परंपरा से दूरी

3. सूर्य पर शनि या राहु की दृष्टि : यदि सूर्य शनि या राहु से पीड़ित हो, तो यह भी पितृ असंतोष का संकेत माना जाता है।

संभावित प्रभाव : पिता के स्वास्थ्य में समस्या, आत्मविश्वास में कमी, करियर में रुकावट, बार-बार अपमान का अनुभव

4. नवमेश का पाप ग्रहों से पीड़ित होना : नवम भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें या बारहवें भाव में होकर राहु, केतु या शनि से प्रभावित हो, तो पितृदोष का निर्माण हो सकता है।

संभावित प्रभाव: आर्थिक अस्थिरता, शिक्षा में बाधा, वैवाहिक जीवन में तनाव, अचानक संकट

5. अमावस्या जन्म योग : कुछ ज्योतिषाचार्य अमावस्या तिथि में जन्म और सूर्य-चंद्र की अशुभ स्थिति को भी पितृदोष से जोड़कर देखते हैं, विशेषत: जब राहु-केतु का प्रभाव हो।

आर्टिस्ट रामसिंह राजोरिया ने मोहन भागवत को दिखाई विश्व की सूक्ष्मतम गीता

माइक्रो आर्टिस्ट रामसिंह राजोरिया ने सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी से मुलाकात की। उन्होने विश्व की सूक्ष्मतम हस्तलिखित श्रीमदभागवत गीता के दर्शन कराये तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। डॉ. भागवत ने उनकी इस अनूठी कृति की प्रशंसा की। भागवत के विचार, सादगी और राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। राजोरिया को सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत से साक्षात भेंट एवं उनका स्नेहिल मार्गदर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मिला।

रामसिंह ने बताया कि श्री भागवत की सरलता, विनम्रता, राष्ट्र के प्रति समर्पण और समाज निर्माण के लिए निरंतर प्रयास हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनके विचारों से नई ऊर्जा, नई दिशा और राष्ट्रसेवा के प्रति और अधिक समर्पण की प्रेरणा मिली।

आर्टिस्ट मारोठिया का अमेरिका में कला प्रदर्शन

अमेरिका के लास वेगास में होने वाले अंतरराष्ट्रीय मेले में कला प्रदर्शन के लिए जयपुर के आर्टिस्ट बाबूलाल मारोठिया का चयन हुआ है। हैंडीक्राफ्ट एंड टेक्सटाइल मंत्रालय भारत सरकार की ओर से उनका नाम चयनित किया गया। 10 से 12 अगस्त तक चलने वाले इस मेले के लिए आर्टिस्ट ने 35 पेपरों पेंटिंग्स बनाई हैं। इन सभी में उन्होंने पत्थर, खनिज, लोहे और चांदी से बने प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया है। जयपुर, कांगड़ा, बसल व डेकन शैली में बनी इन पेंटिंग्स में से अधिकतर राधा–कृष्ण, राग–रागिनियों और महफिल की हैं।

सदराम पुत्र श्री हरखा राम भेरूंदिया, नोहड़िया हाल सांचौर ने RPSC SI (TELECOM) परीक्षा में 47वीं RANK हासिल की है।

सदराम को **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

तीरंदाजी में जोबनेर की **खुशी कुमावत** ने रचा इतिहास, दक्षिण कोरिया में भारत के नाम किया स्वर्ण!

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

पूजा कुमावत को बैंक ऑफ महाराष्ट्र में डिप्टी मैनेजर पद पर नियुक्त होने पर **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

वैवाहिक

Parag Kumawat (Paru)

Date of Birth	:	30th December 1999
Birth Place	:	Jaipur (Raj.) **Height** : 5 Ft 2 In
Education	:	Master of Business Administration (M.B.A)
Occupation	:	Working as Senior HR at BR Softech Pvt. Ltd.
Gotra as follows	:	**Self** : Ghodela
		Mother : Badhaniya
		Paternal Grand Mother : Jalwal
		Maternal Grand Mother : Chaurasiya
Family Details		
Grand Father	:	Lt. Brij Mohan Kumawat
Father	:	Prakash Chand Kumawat
Business	:	Owner- Shree Krishna Tiffin Centre, Parag Photos, Shree Krishna Boys PG
Mother	:	Chitra Kumawat House Wife
Brother (Younger)	:	Keshav Kumawat PGDM in Finance And Marketing Process Associate At Genpact Contact Details
Address	:	C- 47A, Siwar Area Near Paras Marg Bapu Nagar, Jaipur
Contact No	:	9636621894

रक्षाबंधन: स्नेह, समर्पण और अटूट बंधन का उत्सव

राखी का त्योहार आया, खुशियों की सौगात लाया,
भाई-बहन के पावन रिश्ते में, प्रेम का रंग सजाया।

रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति का एक ऐसा अनुपम पर्व है, जो रिश्तों की मिठास और आत्मीयता को दर्शाता है। यह केवल एक पारंपरिक त्योहार नहीं, बल्कि भाई और बहन के निश्छल प्रेम, सम्मान और विश्वास की अमर कहानी है। हिंदू पंचांग के अनुसार, यह त्योहार हर वर्ष श्रावण (सावन) मास की पूर्णिमा को बड़े ही हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ पूरे भारत और दुनिया भर में फैले भारतीय समुदाय द्वारा मनाया जाता है।

'रक्षाबंधन' का शाब्दिक और भावनात्मक अर्थ—

'रक्षाबंधन' शब्द दो शब्दों के योग से बना है— 'रक्षा' और 'बंधन'। इसका शाब्दिक अर्थ है ''सुरक्षा का धागा''।

रेशम का पवित्र धागा: इस दिन बहनें अपने भाइयों की लंबी उम्र, उज्ज्वल भविष्य, सुख और समृद्धि की प्रार्थना करती हैं और उनकी दाहिनी कलाई पर एक रेशमी धागा (राखी) बांधती हैं।

रक्षा का संकल्प: इसके बदले में, भाई अपनी बहन को अपनी सामर्थ्य अनुसार सुंदर उपहार देते हैं और जीवन के हर कठिन मोड़ पर उसकी रक्षा करने, उसके सम्मान को बनाए रखने तथा उसका साथ निभाने का अटूट वचन देते हैं।

पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व : रक्षाबंधन का इतिहास सदियों पुराना है। सनातन परंपरा और इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जो इस पर्व की महानता को सिद्ध करते हैं:

श्रीकृष्ण और द्रौपदी: महाभारत काल में जब भगवान श्रीकृष्ण की उंगली में चोट लग गई थी, तब द्रौपदी ने बिना पल गंवाए अपनी रेशमी साड़ी का पल्लू फाड़कर उनकी उंगली पर बांध दिया था। श्रीकृष्ण ने इस धागे का मान रखते हुए द्रौपदी के चीरहरण के समय उनकी रक्षा की और उनका मान बचाया।

रानी कर्णावती और हुमायूँ: मध्यकालीन इतिहास में जब मेवाड़ की रानी कर्णावती पर बहादुर शाह ने आक्रमण किया, तो रानी ने अपने राज्य की सुरक्षा के लिए मुगल सम्राट हुमायूँ को राखी भेजी थी। हुमायूँ ने राखी के पवित्र रिश्ते का सम्मान करते हुए अपनी सेना को रानी की सहायता के लिए भेज दिया था।

त्यौहार मनाने की पारंपरिक विधि : रक्षाबंधन के दिन सुबह से ही घरों में एक अलग ही उमंग और खुशहाली देखने को मिलती है—

1. पूजा की थाली: बहनें प्रात: स्नान करके नए वस्त्र धारण करती हैं और पूजा की थाली सजाती हैं। थाली में रोली, चंदन, अक्षत (चावल), दीपक, मिठाई और रंग-बिरंगी राखियां रखी जाती हैं।

2. तिलक और आरती: बहनें भाई को शुभ मुहूर्त में पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठाती हैं, उनके माथे पर रोली और अक्षत का तिलक लगाती हैं और उनकी आरती उतारती हैं।

3. राखी और मिठास: तत्पश्चात, भाई की कलाई पर राखी बांधी जाती है और मिठाई खिलाकर मुंह मीठा कराया जाता है। बदले में भाई बहन के चरण स्पर्श करते हैं या स्नेह प्रकट करते हुए उन्हें उपहार सौंपते हैं।

आधुनिक दौर में रक्षाबंधन का बदलता स्वरूप—

आज के आधुनिक समय में रक्षाबंधन का दायरा केवल सगे भाई-बहनों तक ही सीमित नहीं रह गया है।

व्यापक दृष्टिकोण: अब यह पर्व सामाजिक सौहार्द और देशभक्ति का प्रतीक भी बन चुका है। बहनें सीमाओं पर देश की सुरक्षा में तैनात सैनिकों, पुलिसकर्मियों और समाज सेवा में लगे नागरिकों को भी राखी बांधती हैं। इसके अलावा, कई जगहों पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के लिए वृक्षों को भी रक्षासूत्र बांधा जाता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहें तो, रक्षाबंधन का यह छोटा सा रेशमी धागा केवल कलाई को ही नहीं बांधता, बल्कि दो दिलों को अटूट प्रेम के बंधन में पिरो देता है। भागदौड़ भरी आधुनिक जिंदगी में यह पर्व हमें अपने पारिवारिक मूल्यों, सांस्कृतिक जड़ों और अपनों के साथ जुड़ने का एक बहुत ही सुंदर अवसर प्रदान करता है।

- अमिता कुमावत

'वंदे मातरम्' गीत को राष्ट्रगान के समान कानूनी संरक्षण

राष्ट्रगीत का अपमान करने पर जेल और जुर्माना।

संसद ने राष्ट्रीय सम्मान के अपमान की रोकथाम (संशोधन) विधेयक-2026 को मंजूरी दे दी। अब राष्ट्र गीत 'वंदे मातरम्' को भी राष्ट्र गान 'जन गण मन' के समान ही कानूनी संरक्षण मिलेगा।

राज्यसभा से मंजूरी मिलने के बाद लोकसभा ने भी विपक्ष के भारी हंगामे के बीच ध्वनिमत से इस विधेयक को मंजूरी दे दी। अब इसे राष्ट्रपति के अनुमोदन के लिए भेजा जाएगा। राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलते ही यह कानून बन जाएगा।

कानून बन जाने के बाद 'वंदे मातरम्' का अपमान करना, उसके गायन में जानबूझकर बाधा डालना या उसके प्रति अनादर दिखाना दंडनीय अपराध होगा। ऐसे मामलों में अधिकतम तीन वर्ष तक की जेल, जुर्माना या दोनों सजाएं हो सकती हैं।

विघ्नहर्ता श्री गणेश : जीवन जीने की कला और उत्सव का महत्व

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

अर्थात् घुमावदार सूंड वाले, विशाल शरीर वाले, करोड़ों सूर्यों के समान तेजस्वी देव! मेरे सभी कार्यों को हमेशा बाधा रहित पूरा करें।

गणेश चतुर्थी का महत्व और इतिहास : हिंदू धर्म में भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विघ्नहर्ता, बुद्धि और समृद्धि के देवता भगवान श्री गणेश का जन्मोत्सव मनाया जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, इसी पावन तिथि पर माता पार्वती और भगवान शिव के पुत्र श्री गणेश का अवतरण हुआ था। गणेश जी को प्रथम पूज्य का वरदान प्राप्त है। किसी भी शुभ कार्य, पूजा, गृह प्रवेश या व्यापार की शुरुआत से पहले उनका आह्वान अनिवार्य है। गणेश चतुर्थी का त्योहार हमें सिखाता है कि जीवन में नई शुरुआत करने के लिए बुद्धि, विवेक और संयम सबसे आवश्यक गुण हैं। यह उत्सव हमारे भीतर की नकारात्मकता, आलस्य और विघ्नों को दूर कर सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने के लिए मनाया जाता है।

गणेश चतुर्थी मनाने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। सातवाहन, राष्ट्रकूट और चालुक्य राजवंशों के समय से ही गणेशोत्सव के प्रमाण मिलते हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने शासनकाल में इस उत्सव को राष्ट्र निर्माण और संस्कृति के संरक्षण का माध्यम बनाया। वे अपने महल में इसे सार्वजनिक रूप से मनाते थे, जिससे प्रजा में एकता और संस्कृति के प्रति गौरव की भावना जागे। आधुनिक काल में, ब्रिटिश शासनकाल के दौरान जब भारतीयों को एक जगह इकट्ठा होने और राजनीतिक सभाएं करने पर पाबंदी थी, तब **सन 1893 में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने पुणे में सार्वजनिक गणेशोत्सव की नींव रखी। तिलक जी का उद्देश्य इस धार्मिक मंच के जरिए समाज के सभी जातियों और वर्गों के लोगों को एक साथ लाना और उनमें देश की आजादी के लिए राष्ट्रवाद की भावना फूंकना था।** इसके बाद से यह त्योहार घरों की चारदीवारी से निकलकर पंडालों तक पहुँचा और आज यह पूरे विश्व में एक महापर्व बन चुका है।

उत्पत्ति की कथा और आध्यात्मिक संदेश : शिव महापुराण के अनुसार, माता पार्वती ने अपने शरीर के चंदन और उबटन से एक सुंदर बालक का निर्माण कर उसमें प्राण फूंके और उसे द्वार पर पहरा देने का आदेश दिया। जब भगवान शिव वहाँ आए, तो बालक ने माता की आज्ञा का पालन करते हुए उन्हें अंदर जाने से रोक दिया। इस बात पर हुए विवाद और युद्ध में क्रोधित होकर शिव जी ने त्रिशूल से बालक का सिर धड़ से अलग कर दिया। माता पार्वती को विलाप और क्रोध करते देख सृष्टि को बचाने के लिए शिव जी ने दूतों को उत्तर दिशा में भेजा। दूत एक गज-शिशु का मस्तक लेकर लौटे, जिसे शिव जी ने बालक के धड़ से जोड़कर उसमें प्राण डाल दिए। इस प्रकार श्री गणेश का पुनर्जन्म हुआ और वे गणपति कहलाए।

यह कथा केवल एक पौराणिक घटना नहीं है, बल्कि मानव चेतना और साधना का एक बहुत बड़ा रहस्य है। इसमें माता पार्वती के शरीर का उबटन जीवात्मा के सांसारिक मल, अहंकार और केवल शरीर को ही सब कुछ मानने की संकुचित बुद्धि का प्रतीक है। शिव पूर्ण चेतना, गुरु और परमात्मा के प्रतीक हैं। जब तक मनुष्य के भीतर अज्ञान और मैं का भाव रहता है, तब तक वह परमात्मा से नहीं मिल सकता। शिव द्वारा गणेश का सिर काटना वास्तव में गुरु या ईश्वर द्वारा मनुष्य के सीमित अहंकार और अज्ञान को नष्ट करने की प्रक्रिया है। इसके बाद लगाया गया हाथी का सिर महा-बुद्धि और विवेक का प्रतीक है। जब पुराना अज्ञानी अहंकार नष्ट होता है, तभी ईश्वर हमें दिव्य बुद्धि, धीरज और दूरदर्शिता प्रदान करते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि आत्मज्ञान पाने के लिए अपनी छोटी सोच को त्यागकर असीम चेतना को अपनाना पड़ता है।

गणेश जी के अंगों, आभूषणों और सवारी का महत्त्व : श्री गणेश का रूप एक सजीव मार्गदर्शिका है, जिसका हर अंग जीवन जीने की कला सिखाता है। उनका विशाल मस्तक गहरी सोच, उच्च बौद्धिक क्षमता और ज्ञान संचय का प्रतीक है। यह हमें संदेश देता है कि अपनी सोच को हमेशा बड़ा रखें और विवेक से काम लें। गणेश जी की छोटी आंखें तीक्ष्ण दृष्टि और एकाग्रता को दर्शाती हैं। जीवन में किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए हमारा ध्यान अचूक होना चाहिए। उनके बड़े कानों को शूर्पकर्ण कहा जाता है, जो संदेश देते हैं कि एक अच्छे नेता और इंसान को हमेशा दूसरों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए। कान सूप की तरह होने का अर्थ है कि जैसे सूप कचरे को बाहर फेंक देता है और साफ अनाज को अंदर रख लेता है, वैसे ही हमें भी बुरी बातों को छोड़कर केवल अच्छी बातों को ग्रहण करना चाहिए।

गणेश जी की लंबी सूंड हमेशा सक्रिय रहती है जो परिस्थितियों के अनुकूल खुद को ढालने की कला सिखाती है। इसकी संवेदनशीलता इतनी होती है कि यह भारी पेड़ को भी उखाड़ सकती है और जमीन पर गिरी छोटी सी सुई को भी उठा सकती है। जीवन में हमें बलवान और संवेदनशील दोनों होना चाहिए। गणेश जी का एक दांत टूटा हुआ है, इसलिए उन्हें एकदंत कहते हैं। यह द्वंद्व यानी सुख-दुख, लाभ-हानि, मान-अपमान से ऊपर उठकर समभाव में रहने का संदेश देता है। यह एकाग्रता और

त्याग का भी प्रतीक है, क्योंकि उन्होंने महाभारत लिखने के लिए अपना दांत स्वयं तोड़ दिया था। उनका बड़ा उदर दर्शाता है कि मनुष्य को जीवन के सभी कड़वे-मीठे अनुभवों, रहस्यों, आलोचनाओं और सुख-दुख को पचाना आना चाहिए।

उनके आभूषण और अस्त्र भी विशेष महत्व रखते हैं। पाश सांसारिक मोह-माया और वासनाओं को बांधने का प्रतीक है। अंकुश कुप्रवृत्तियों, क्रोध और अहंकार पर लगाम लगाने का औजार है। मोदक आनंद, एकाग्रता और साधना के मीठे फल का प्रतीक है। जब हमारी बिखरी हुई ऊर्जा एक बिंदु पर केंद्रित होती है, तब जीवन में आनंद का रस मिलता है। उनकी वरद मुद्रा अभय और कल्याण का प्रतीक है, जो भक्तों को आश्वस्त करती है कि जो धर्म के मार्ग पर हैं, उनका कभी अमंगल नहीं होगा। भगवान गणेश का वाहन एक छोटा सा चूहा है। चूहा स्वभाव से बेहद चंचल होता है और हर चीज को कुतरता रहता है। यह हमारी वासनाओं और अनियंत्रित इच्छाओं का प्रतीक है, जो हमारे जीवन की खुशियों को धीरे-धीरे कुतरती रहती हैं। गणेश जी का चूहे के ऊपर बैठना यह दिखाता है कि उन्होंने अपनी चंचल इच्छाओं और मन को पूरी तरह नियंत्रण में कर लिया है। यह संदेश देता है कि बुद्धि हमेशा वासनाओं के ऊपर होनी चाहिए, न कि उसके अधीन।

श्री गणेश से मिलने वाला जीवन संदेश : गणपति जी का चरित्र आधुनिक युग के इंसानों के लिए एक आदर्श जीवन-प्रबंधन मार्गदर्शिका है। जब शिव-पार्वती ने कार्तिकेय और गणेश के बीच ब्रह्मांड का चक्कर लगाने की प्रतिस्पर्धा रखी, तब कार्तिकेय अपने वाहन मयूर पर बैठकर ब्रह्मांड की परिक्रमा करने निकल गए। परंतु गणेश जी ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से काम लिया और माता-पिता के चारों ओर चक्कर लगा लिए। उन्होंने कहा कि माता-पिता के चरणों में ही पूरा ब्रह्मांड है। यह संदेश देता है कि अपनी जड़ों, परिवार और माता-पिता का सम्मान करना सबसे बड़ा धर्म है।

इसके साथ ही, गणेश जी गणपति हैं, यानी शिव के गणों के स्वामी। शिव के गणों में भूत, प्रेत, अघोरी, पशु आदि सब शामिल थे, जो बिल्कुल विपरीत स्वभाव के थे। गणेश जी ने अपनी बुद्धि से उन सभी को एक सूत्र में पिरोया। एक अच्छा लीडर वही है जो विविधता को एकता में बदल सके। वे बुद्धि के दाता और कलाओं के संरक्षक भी हैं। उन्होंने बिना रुके महर्षि वेदव्यास के मुख से निकले हर शब्द को समझा और महाभारत महाकाव्य को लिपिबद्ध किया। यह हमें निरंतर सीखते रहने और शिक्षा के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है।

निष्कर्ष रूप में गणेश चतुर्थी का यह पावन पर्व हमें बाहरी आडंबरों और उत्सवों से ऊपर उठकर अपने भीतर छिपे असीम सामर्थ्य और चेतना को जागृत करने का आमंत्रण देता है। भगवान गणेश की शारीरिक बनावट और उनकी कथाएं केवल पूजा की विषय-वस्तु नहीं हैं, बल्कि वे जीवन के जटिलतम संकटों को सुलझाने के सूत्र हैं। इस उत्सव की वास्तविक सार्थकता तभी है जब हम अपने संकुचित दायरे से बाहर निकलकर समाज में एकता स्थापित करें, अपनी बौद्धिक क्षमताओं का विकास करें और हर नई शुरुआत को ज्ञान और न्याय के मार्ग पर आगे बढ़ाएं। जब हमारी बुद्धि सात्विक और मन नियंत्रित होगा, तभी हमारे जीवन के हर क्षण में वास्तविक रिद्धि-सिद्धि का वास होगा।

-डॉ. प्रिया मारवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर

2 मिनट रीड

''शिक्षा कोई ऐसी वस्तु नहीं जो केवल दे दी जाए और आप उसे ग्रहण कर लें; यह वह अमूल्य सिद्धि है, जिसे स्वयं के अथक परिश्रम, संकल्प और पुरुषार्थ से अर्जित किया जाता है। जीवन की हर बड़ी सीख और हर बड़ी मंजिल को अपने कर्मों की भट्टी में तपकर अर्जित करना पड़ता है। प्रत्येक अनुभव से सीखिए, प्रत्येक चुनौती को गुरु मानिए, और प्रत्येक कदम को अपने व्यक्तित्व के निर्माण की दिशा में बढ़ाइए।''

-अल्बर्ट आइंस्टीन

भगवान श्री गणेश पर प्रसिद्ध कविता

हे विघ्नहर्ता, हे गणनायक,
तुम ही हो जग के सिद्धिविनायक।
मस्तक विशाल, नयन हैं छोटे,
काटते पल में विघ्न अनूठे।
एकदंत प्रभु बुद्धि विधाता,
तुम ही हो विघ्नों के त्राता।
माता पार्वती के तुम प्यारे,
शिव के नयन-तारे, जग के रखवारे।
मोदक प्रिय प्रभु भोग लगाते,
मूषक वाहन पर तुम आते.
धीरज का संदेश सुनाते,
चंचल मन को वश में लाते।
प्रथम पूज्य हे देव तुम्हारे,
चरणों में आए शीश झुकाए।
दूर करो अज्ञान का अंधियारा,
महक उठे इस जग का कोना-कोना सारा।
रिद्धि-सिद्धि के दाता तुम हो,
शुभ और लाभ के विधाता तुम हो।
आओ प्रभु हमारे मन मंदिर में,
विघ्न हरो, सुख भरो जीवन के हर क्षण में।

-डॉ. प्रिया मारवाल

दिनचर्या संबंध नियम

आज हम दैनिक जीवन में रहन-सहन की आदतों तथा दिनचर्या के नियम व उनसे जुड़े परम्पराओं के विषय में बात करेंगे। हमारे सोने-जागने, खाने-पीने व कार्य करने के नियमों का और तौर तरीकों का हमारे जीवन पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। प्रातःका ब्रह्म मूहूर्त अर्थात् सूर्योदय से पहले जागने तथा सुबह जल्दी स्नान करने से हमारे शरीर तथा मस्तिष्क में ताजगी, स्फूर्ती तथा कार्यशीलता का संचार होता है। इसी प्रकार रात्रि के समय भी जल्दी सोना चाहिए जिससे हमारा पाचन तंत्र सुदृढ़ रहता है। आंखे सुंदर रहती है। शरीर व दिमाग में शिथिलता की समस्या दूर होती है। संक्षेप में कहा जाए तो रात में जल्दी सोना व सुबह जल्दी उठना सेहत के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। दोपहर के भोजन के बाद एकाध घंटे की हल्की झपकी भी सेहत के लिए लाभकारी होती है। इसी प्रकार भोजन करने के लिए भी उचित समय का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। सुबह का भोजन 10 बजे तक अवश्य कर लेना चाहिए क्योंकि सुबह के समय हमारी जठराग्नि सर्वाधिक कार्यशील होती है। इस समय भरपेट भोजन करना चाहिए। सुबह के भोजन में हम पकवान व चाट-पकोड़ी जैसे खाद्य पदार्थों को शामिल कर सकते हैं। इसमें ताजा छाछ व दही अवश्य शामिल होना चाहिए। इसी प्रकार दिन का भोजन दोपहर 1 से 2 के बीच करें। इसमें प्रचुर मात्रा में कार्बोहाइड्रेड, फाइबर व प्रोटीन शामिल होना चाहिए। दिन के भोजन के साथ सलाद, शिकंजी व फल लिए जा सकते हैं। रात्रि का भोजन हमें शाम 6 से 7 बजे के बीच अवश्य कर लेना चाहिए। इस नियम की पालना इसलिए आवश्यक है कि हमारा लीवर सूर्यास्त के पश्चात अपना कार्य सुचारू रूप से नहीं कर पाता है इससे देर रात को किए गए भोजन को पचाने में शरीर असमर्थ होता है और हमें पाचन संबंधी समस्याओं क सामना करना पड़ सकता है। खाना हमेशा जमीन पर पालथी मारकर बैठकर ही खाना चाहिए। भोजन को अपने बैठने के स्थान से थोड़ा ऊपर रखें। इसके लिए पाटे या चौकी का उपयोग कर सकते हैं। पुराने समय में लोग भोजन की थाली के चारों ओर पानी की रेखा बनाया करते थे। इससे खुशबू से आने वाली चींटी का थाली तक आने भोजन में प्रवेश करने का डर नहीं रहता था। जहां तक हो भोजन हाथ से ही करना चाहिए। चम्मच का उपयोग भोजन करते समय बहुत आवश्यक होने पर ही करना चाहिए। इसके कई फायदे हैं। इससे ब्लड शूगर बैलेंस में रहता है। स्वाद का एहसास ज्यादा बेहतर होता है। मांसपेशियों की कसरत व ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है। आयुर्वेद कहता है कि भोजन को मिलाने के दौरान हमारे हाथों की अंगुलियों के बार-बार आपसी दबाव से पूरे शरीर के पाइन्ट दबते हैं जिससे पाचन व शरीर की अन्य क्रियाएं मजबूत होती हैं। भोजन करने से पहले हाथों को अवश्य धोएं। नीचे गिरा भोजन नहीं करें। भोजन के लिए सर्वोत्तम बरतन कांसे या पीतल की धातु का बरतन तथा मिट्टी का पात्र माना जाता है। प्लास्टिक व एल्यूमिनियम के बरतन में कतई भोजन नहीं करें। भोजन को चबा-चबा कर खाना बहुत जरूरी है। इससे भोजन का पाचन शीघ्र होता है। भोजन करने के एक घंटे बाद ही पानी पीना चाहिए। ताकि पाचन एन्जाइम अपना कार्य सही ढंग से कर सकें। रात्रि के भोजन के तुरन्त बाद सोना नहीं चाहिए। रात्रि का भोजन करके 10 से 20 मिनट टहलना अत्यन्त आवश्यक है। हो सके तो कुछ देर वज्रासन में बैठना चाहिए। रात में सोने से पहले एक गिलास दूध का सेवन अवश्य करें।

- उर्वशी बालोदिया

गरीब और अमीर के बीच की खाई

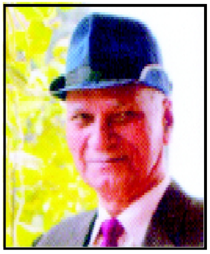

एक मनमौजी तथा शौकीन राजा था जो ऐशो-आराम की चीजों पर अपार खर्च करता था। उसने एक महल बनवाया जिसकी सुन्दरता देखते ही बनती थी। राजा ने अपने इस महल में सुनदर सरोवर बनवाया जिसमें रंग-बिरंगी मछलियाँ तैरतीं, कमल के फूल खिलते। बाग-बगीचे लगवाए जिनमें फूलों की छटा सभी को मुग्ध कर देती थी। इस महल में आकर अत्यन्त ही प्रसन्न था वह राजा।

एक दिन राजा ने देखा कि महल की बगल से धुआँ उठकर आ रहा है। यह देखकर राजा का क्रोध आसमान पर चला गया। उसने पहरेदारों से पूछा कि यह धुआँ कहाँ से आ रहा है ? पहरेदारों ने कहा महाराज ! पास में ही एक वृद्धा की झोपड़ी है। धुआँ वहीं से आ रहा है। राजा ने क्रुद्ध होकर कहा—''जाकर उस वृद्धा से कहो कि अपनी झोपड़ी यहाँ से हटा लें।'' पहरेदारों ने वृद्धा को यह आदेश सुनाया तो वह बोली—''अपने राजा को कह दो कि मैं अपनी झोपड़ी नहीं हटाऊँगी।'' पहरेदारों से वृद्धा महिला का इनकार जानकर राजा बहुत कुपित हुआ और उसने वृद्धा को पेश होने का आदेश दिया। जब वह आई तो राजा बोाल—''ऐ बुढ़िया ! तू अपनी झोपड़ी क्यों नहीं हटाती ? मेरी आज्ञा नहीं मानेगी तो दण्ड भुगतना होगा।'' तब वृद्धा ने विनम्रतापूर्व कहा—''महाराज ! आपका आदेश सिर आँखों पर किन्तु मेरी एक बात का उत्तर दीजिए। आप समर्थ हैं। आपकी दृष्टि कभी मेरी झोपड़ी पर नहीं गई। कभी आपने विचार किया कि महल और झोपड़ी के फासले को कम किया जाए ?'' वृद्धा की बात ने राजा की आँखें खोल दीं। उस दिन से उसने वृद्धा सहित निर्धनों की सहायता के निमित्त अपना खजाना सारा खोल दिया। गरीबों और अमीरों के बीच की खाई तभी पाटना संभव होता है, जब अमीर गरीबों के प्रति संवेदनशील हों और सहयोग का भाव रखते हों।

-प्रो. बी. के. कुमावत, सेवानिवृत्त प्राचार्य

देश और समाज में बढ़ रही हैं वास्तु की अहमियत

आज के आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीक ने जीवन को सुविधाजनक अवश्य बनाया है, लेकिन मानसिक तनाव, पारिवारिक कलह, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और व्यवसाय में अस्थिरता जैसी चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। ऐसे समय में लोग अपने जीवन में सकारात्मकता, संतुलन और शांति की तलाश कर रहे हैं। यही कारण है कि देश और समाज में वास्तु शास्त्र की अहमियत लगातार बढ़ती जा रही है।

वास्तु शास्त्र केवल भवन निर्माण की एक प्राचीन भारतीय पद्धति नहीं है, बल्कि यह प्रकृति, पंचमहाभूतों और दिशाओं के संतुलन पर आधारित एक जीवन-दर्शन है। इसका उद्देश्य ऐसा वातावरण तैयार करना है जहाँ व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से बेहतर जीवन जी सके।

आज घर, कार्यालय, उद्योग, विद्यालय, अस्पताल, होटल, शोरूम और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में भी वास्तु सिद्धांतों का ध्यान रखा जा रहा है। अनेक लोग भवन निर्माण से पहले वास्तु विशेषज्ञ की सलाह लेना आवश्यक समझते हैं ताकि भविष्य में अनावश्यक समस्याओं से बचा जा सके।

वास्तु के प्रति बढ़ती जागरूकता का एक प्रमुख कारण लोगों के सकारात्मक अनुभव भी हैं। जब किसी स्थान पर प्रकाश, वायु, दिशा और ऊर्जा का उचित संतुलन होता है, तो वहाँ रहने और कार्य करने वाले लोगों को अधिक सुकून, उत्साह और कार्यक्षमता का अनुभव होता है। हालांकि, जीवन की हर समस्या का समाधान केवल वास्तु नहीं हो सकता। सफलता के लिए सही योजना, परिश्रम, अनुशासन और सकारात्मक सोच भी उतने ही आवश्यक हैं।

सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और विभिन्न जागरूकता अभियानों ने भी वास्तु शास्त्र को अधिक लोगों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज लोग अपने घर और कार्यस्थल की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए वास्तु के सिद्धांतों को समझने और अपनाने में रुचि दिखा रहे हैं।

भारतीय संस्कृति और परंपरा से जुड़ा वास्तु शास्त्र आज केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि विश्व के अनेक देशों में भी इसकी चर्चा और उपयोग बढ़ रहा है। यह हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा का ऐसा पक्ष है जो आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

ज्योतिषाचार्य एवं वास्तु विशेषज्ञ
सुरेन्द्र पाल सिंह कुमावत
Yantram Ved Vastu

2 मिनट रीड

आज दोस्ती कर लो किताबों से,
कल तुमसे दोस्ती करेगी दुनिया।
नींद में आये सपने भी
मेहनत से ही पूरे होते हैं।
जो रात को पढ़ते हैं,
वो दिन में इतिहास रचते हैं।
आज की गई पढ़ाई,
कल पूरी जिंदगी की कमाई।
खामोशी से पढ़ी गई किताबें,
एक दिन तालियें की गूँज बनती है।
इसलिए बर्बाद होते वक्त को रोको,
यही वक्त एक दिन कामयाब बनाता है।
खामोश रहकर की गई मेहनत,
जरूर सपुल्ता का शोर मचा देगी।
इसलिए मोबाइल छोड़े और किताब उठायें,
यहीं सपनों को चार चाँद लगायेंगे।

एआई के दो रूप

एआई (Artificial Intelligence) का युग है। यह मानव कल्याण के लिए वरदान भी हो सकती है और शापित भी, इसके उपयोग पर निर्भर करता है। एआई एक तटस्थ शक्ति है, जो उपयोगकर्ता की मंशा के अनुसार सकारात्मक या नकारात्मक परिणाम दे सकती है।

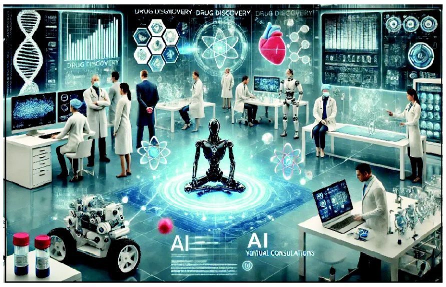

एआई के दोतरफा रूप:

रावण (मायावी रूप): यदि एआई का प्रयोग छल, वासना, स्वार्थ या विनाश के लिए किया जाए, तो यह असुर प्रवृत्ति को बढ़ाता है। यह समाज में भ्रम, झूठ और पतन का कारण बनता है।

राम (मायापति रूप): यदि एआई का प्रयोग सेवा, ज्ञान, रक्षा और जगत कल्याण के लिए हो, तो यह दिव्य शक्ति बन जाता है। यह मानवता को जोड़ने और उत्थान का मार्ग दिखाता है।

एआई केवल एक माध्यम या माया है। असली नियंत्रण मानव की बुद्धि और नैतिकता के हाथ में है। नीयत साफ होने पर तकनीक भी रामराज्य का साधन बन सकती है।

-एस.आर. सिंघाटिया

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोड़िया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर

विशिष्ट संरक्षक

वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्‌दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मँडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, ढोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/150 श्री कैलाश घोड़ावड़, सूरत
वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत
वि/153 डॉ. अनूप कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/154 श्री महेश जोहरी, लालकोठी, जयपुर
वि/155 श्री सोभाग्य चंद्र कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/156 डॉ. डी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/157 श्री वीरेन्द्र सिंह तारकशी, लक्ष्मी आभूषण मंदिर, जयपुर

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

18 जुलाई चन्द्र मोहन खोराणिया, जयपुर
19 जुलाई श्रीमती कौशल्या देवी पत्नी स्व. श्री छीतरमल दोराया, सांगानेर
19 जुलाई श्री कृष्ण गोपाल पुत्र श्री युगल किशोर मोहब्या, प्रतापनगर, जयपुर
20 जुलाई श्रीमती तीजा देवी पत्नी स्व. श्री भैरूलाल खोरानिया, टोडी
21 जुलाई श्रीमती विमला देवी पत्नी श्री बाबूलाल दम्बीवाल, जयपुर
21 जुलाई श्री रणजीत कुमावत पुत्र स्व. श्री जगदीश मारवाल
22 जुलाई श्री श्रवण लाल कुमावत पुत्र स्व. श्री नारायण, सांगानेर
26 जुलाई श्रीमती सरस्वती देवी पत्नी स्व. श्री चौथमल सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
27 जुलाई श्री बाबूलाल फौजी पुत्र स्व. श्री भंवरलाल सिरोठिया, सांगानेर, जयपुर
27 जुलाई श्रीमती विजय वर्मा पत्नी स्व. श्री अशोक घोड़ेला, मॉडल टाउन
28 जुलाई श्री त्रिलोक चन्द घीया, नेहरू बाजार, उदयपुर
28 जुलाई श्री दिलखुश चन्द्र कुमावत (घीया) उदयपुर
30 जुलाई श्री हरिनारायण (मास्टर) छाबल्या, सांगानेर, जयपुर
31 जुलाई श्री हेमन्त वर्मा (IOCL) पुत्र श्री मगनलाल वर्मा (राजोरिया), जयपुर
6 अगस्त श्री घनश याम होदकास्या पुत्र स्व. श्री छोटीलाल जयपुर
7 अगस्त श्रीमती मुनकी देवी पत्नी सव. श्री पेमाराम जेठीवाल, जयपुर
8 अगस्त श्री इंदर सिंह बावला Retd. XEN जयपुर
8 अगस्त श्री नीतेश कुमावत (काका हाथोज) कण्डेरीवाल, जयपुर
9 अगस्त श्रीमती कमलेश वर्मा पत्नी श्री ओम प्रकाश बैरा, जयपुर
10 अगस्त श्री रामकृष्ण कुमावत (गमेरिया), उदयपुर
13 अगस्त श्रीमती रमा देवी पत्नी स्व. श्री हीरालाल कुदाल, जयपुर
13 अगस्त श्री पवन कुमार मारवाल, बनीपार्क, जयपुर
13 अगस्त श्रीमती विमला देवी पत्नी स्व. श्री कालूराम कुमावत, जयपुर
15 अगस्त श्री कैलाश चन्द बड़ीवाल, जयपुर
18 अगस्त श्री पुष्कर सडुन्दिया, चित्रकूट नगर, उदयपुर

विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

युवक

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
संजय	M.Sc., B.Ed.	Teacher	4.6.94	5'7''	घोड़ेला	मारवाल	देवतवाल	सिरस्वा	9552829102	सीकर
डॉ. मनीष	MBBS	Doctor	5.7.2002	5'10''	कारगवाल	मारवाल	घोड़ेला	दम्बीवाल	9928089322	जयपुर
राहुल	Graduate+ITU	CNC Operator	1.7.2000	5'9''	दम्बीवाल	नेमीवाल	बासनीवाल	नागा	8000197630	जोबनेर
अंकित	BCA, ANSA	IT Supervisor	22.6.97	5'5''	खोवाल	मनेठिया	मारोठिया	खाटूवाल	9079377632	जयपुर
पीयूष	B.Com, RSCIT	Medical	28.10.97	-	आसीवाल	खण्डारिया	मारवाल	कैक्टिया	8890454420	जयपुर
दिनेश	CA (London) M.Com	Accountant at Mumbai	24.4.98	5'7''	मजावरिया	घोड़ेला	दोराया	मारोठिया	9819443489	चित्तौड़गढ़
राकेश(तलाकशुदा)	10th	Self Business	1.9.80	5'5''	सिरस्वा	मोरवाल	छापोला	नेमीवाल	9929379454	जयपुर
निर्मल	Graduate ITI	Electiricion	6.2.2004	5'11''	बड़ीवाल	मारवाल	आसीवाल	मारोठिया	8302025335	मंडाभीमसिंह
दीपक	B.B.A.	MBA Pursing	16.11.2002	5'7''	अजमेरा	दवे	मान्दन्या	दवे	9617606040	उज्जैन
अक्षित	B.Tech (CS)	Software Engi.	16.11.97	6'0''	गुडीवाल	राणोलिया	अनावड़िया	भोड्या	9829312304	जयपुर
डॉ. आशुतोष	BDS, FICOI (USA)	Self Dental clinic	19.6.2001	6'0'	उदयवाल	अडानिया	मारवाल	कारगवाल	9166138138	जयपुर
अंश	M.Design.(Italy)	Interior Designer	28.1.95	5'11'	छापोला	धनारिया	तोंदवाल	दादरवाल	9327299099	वदोडरा
अजय	B.Com., M.Ed.	--	4.4.2001	5'10''	सिंगाटिया	तुनगरिया	नागा	बिड़चारिया	9314162623	जयपुर
प्रमोद	M.Com.	IFFCO Kishan Fin.ltd.	21.11.92	5'6''	खोवाल	बबेरीवाल	कारगवाल	बालोदिया	7790827021	जयपुर
भारत	B.Tech (CS)	Software	3.3.2000	5'11''	भोड़ीवाल	कारगवाल	करोडीवाल	मनेठिया	9887876723	जयपुर
विजय	B.Sc.	Self Business	16.8.2001	-	देवतवाल	राहोरिया	मारवाल	घोड़ेला	9799134481	जयपुर
पवन	B.A.	Real Estate & Self Busine	23.9.98	5'10''	कुण्डलवाल	मारवाल	जेठीवाल	सिरस्वा	9024629802	जयपुर
महिपाल	Physiotherapy	Pvt. Job	24.6.2004	5'7''	कारगवाल	बड़ीवाल	खोवाल	करोड़ीवाल	9928733753	जयपुर
विशाल	M.A., B.Ed.	Director School	13.3.94	5'6''	बारवाल	भोरोदिया	बेरा	खोवाल	9782525402	बगरू

युवतियाँ

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				संपर्क सूत्र मो. नंबर	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी		
गरिमा	M.Sc. (Phy.)	Pre. Compition	4.3.2000	5'4''	खोवाल	सिरोदिया	गठेला	तुन्दवाल	8955312200	कोटा
तरुना	MBA Hr Finance	HDB Finance	1.3.97	5'4''	कुण्डलवाल	बबेरवाल	जायलवाल	कुकरवाल	9414077676	कोटा
रितू	M.Com.	Admin & Facility PNC	13.8.94	5'1''	खोरानिया	कारगवाल	काम्या	बालोदिया	7877896848	जयपुर
श्रृष्ठी	B.A. LLB.	Pre. Govt. job	24.8.98	5'4''	भोड्या	लोहरवाड़िया	कालोया	दुहारिया	9829995695	चौमूं
ज्योति	M.Com.	Compition	6.6.98	5'3''	दम्बीवाल	बारावाल	पडलाया	मामोडिया	9024242402	चौमूं
वर्तिका	MBA (HR)	IT Recoruter	2.8.94	5'5''	रावरिया	बबेरीवाल	मोरवाल	उदीवाल	6266773740	मन्दसौर
अंजली (मांगलिक)	M.A.	Sch. Teacher	10.10.98	5'7''	बासनीवाल	कुदाल	मारवाल	घोड़ेला	8233009001	जयपुर
विनीता	MA., B.Ed. RSCIT	--	15.7.99	5'3''	बंशीवाल	पोरवाल	घासोलिया	तूनवाल	9983403371	सीकर
निहारिका	B.Des (IIT, Mumbai)	Senior Product Desig.	5.9.2000	5'6''	सारड़ीवाल	महरावंडिया	खोवाल	कारगवाल	9414030084	जयपुर
किरण	M. Tech, BITS Pilani	Benz R & D.	16.3.94	5'5''	सागर	चांदेरा	मालवीय	तिलायचा	9313723675	जोधपुर
अर्चना	B.Sc. (Nursing)	Nursing Officer	15.9.98	5'5''	नेमीवाल	खोरानिया	देवतवाल	सारड़ीवाल	9251825302	फुलेरा
अनामिका	M.A.(Eng.)DJMC	--	13.8.94	5'2''	भोड़या	लोहरवाडिया	किरोड़ीवाल	रेवाड़ी	8005728175	जयपुर
उमीता	BBA, MBA (HR)	--	1.4.98	5'0''	नेहरा	बासनीवाल	घण्टेलवाल	भोमारिया	98256807222	बलसाड
रवीना	MA, B.Ed.	Pre. Compition	30.7.94	5'5''	मालिया	घोड़ेला	नागेदरा	राहोरिया	7737179711	अजमेर
किरन	B. Tech, MS	Software Engi.	22.5.98	5'10''	धुंधारिया	दम्बीवाल	बधानिया	नरानिया	9024129220	अजमेर
चारू	B.A.	Govt. Ser. (Jr. Asst.)	2.5.2000	5'2''	गैदर	बालोदिया	राणोलिया	कारगवाल	8094793374	जयपुर
तनिषा	B.Tecj (CS)	--	15.8.2002	5'6''	जाखडा	उदिवाल	एनीया	मांडीवाल	9406671419	मन्दसौर
भूमिका	MBA	Teaching	26.11.2003	5'4''	कुरारिया	इटारा	उदीवाल	मोरवाल	8959700355	मन्दसौर
नेहा	M.Sc.	--	16.1.96	5'4''	बालोदिया	मारवाल	सिरोहिया	घासोलिया	9460145350	जयपुर
पारूल	Graduation	Study	3.12.98	5'3''	सिरस्वा	भोमरिया	गुरी	दादरवाल	9828616026	चूरू

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम ''कुमावत इंडिया पत्रिका''

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिले तो क्या करें

'कुमावत इंडिया' पत्रिका प्रति माह 25 तारीख तक सदस्यों को डाक से भेजी जाती है। यदि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका माह के अंत तक आपको नहीं मिले तो कृपया अपने क्षेत्र के पोस्टमैन अथवा पोस्ट मास्टर से इसकी शिकायत करें तथा हमें सूचित करें जिससे आपको सम्बन्धित अंक की प्रति पुनः भेजी जा सके। यदि शिकायत पर कोई कार्यवाही न हो तो कृपया इसकी सूचना 'कुमावत इंडिया' पत्रिका कार्यालय को दें या व्हाट्सएप नं. 9414554322 पर अपना नाम, पता मय पिनकोड लिखकर मैसेज करें। जिससे पत्रिका स्तर से भी सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस को शिकायत भेजी जा सके।

सूचना

आदरणीय समाजजनों से निवेदन है कि 'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशन हेतु सामाजिक गतिविधियों के समाचार, समाज प्रतिभाओं का विवरण व लेख आदि की जानकारी पत्रिका कार्यालय या व्हाट्सएप नं. 9414554322 या e-mailÑkumawatindiapatrika@gmail.com पर भिजवाने का कष्ट करें। सम्पादक मण्डल इन पर विचार करके इन्हें प्रकाशित कराने की कार्यवाही करेगा। आपसे निवेदन है कि प्रकाशनार्थ सामग्री मूल हो तथा पूर्व में कहीं प्रकाशित नहीं हुई हो।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।

सदस्यता समाप्ति सूचना

सदस्यता संख्या 5/1 से 5/86 तक के पांच वर्षीय सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।

-: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में निःशुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
13. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
14. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
15. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

श्री संजय वर्मा (तोंदवाल) सम्मानित

राज्य स्तर पर उत्कृष्ट कार्यों के लिए राजफैड के निजी सचिव श्री संजय वर्मा (तोंदवाल) को सम्मानित किया गया है। सहकारिता विभाग की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, प्रशासनिक दक्षता, सक्रियता, समन्वय क्षमता एवं नवाचारों को गति देने में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। सहकारिता एवं नागरिक उड्डयन विभाग के राज्य मंत्री श्री गौतम कुमार दक एवं डॉ. समित शर्मा, आईएएस, शासन सचिव एवं रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां, राजस्थान की ओर से उन्हें प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

श्री संजय वर्मा जी को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

डॉ. पलाश कुमावत पुत्र हरीश-वीणा ईठारा को जर्मनी की यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रेमेन से मरीन जियोसाइंसेज में मास्टर के दौरान सर्वश्रेष्ठ थीसिस पुरस्कार (2022-23) एवं मरीज जियो कैमेस्ट्री (Marine Geochemistry) में Ph.D. की उपाधि सर्वोच्च सम्मान (Summa Cum Laude) मिलने पर **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

मदन कुमावत सहायक आचार्य (ABST) चयनित

जयपुर निवासी मदन कुमावत ने राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) द्वारा आयोजित सहायक आचार्य (ABST) भर्ती परीक्षा में सफलता हासिल कर समाज एवं परिवार का नाम गौरवान्वित किया है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

नन्दकिशोर कुदीवाल
गुढ़ा बेरसल
Mob. 9784657951

राजेंद्र कुदीवाल
Mob. 9983918484
9414250783

कुमावत कंस्ट्रक्शन एंड बिल्डर्स

हमारी सेवाएं
- संपूर्ण भवन निर्माण
- मकान, कोठी व फैक्ट्रियां
- प्लानिंग एवं डिजाइन
- रेनोवेशन एवं इंटीरियर
- गुणवत्ता के साथ समय पर कार्य

आपके सपनों का
भरोसेमंद निर्माण साथी

हमारी विशेषताएं
- उच्च गुणवत्ता
- आकर्षक डिजाइन
- आधुनिक तकनीक
- समय पर कार्य पूर्ण
- उचित मूल्य

ऑफिस एस 8, रिको इंडस्ट्रीज एरिया, सिंवार मोड़, जयपुर

9983918484, 9414250783, 9784657951

मजबूत नींव | आधुनिक डिजाइन | प्रिमियम क्वालिटी | समय पर डिलीवरी | ग्राहक संतोष हमारी पहचान

वास्तु दोषों का पितृ दोष से संबंध

ज्योतिष शास्त्र में पितृ दोष को सामान्यतः कुंडली में सूर्य-राहु या केतु की अशुभ युति से जोड़ा जाता है, लेकिन बहुत कम लोग यह जानते हैं कि घर का वास्तु भी इस दोष को जन्म देने या उसे और गहरा करने में सीधी भूमिका निभाता है।

दक्षिण-पश्चिम (नैरित्य कोण) का दोष यह दिशा स्थिरता, पृथ्वी तत्व, रिलेशनशिप, कुल, पूर्वज, परिवार की भारी ऊर्जा से जुड़ी रहती है।

इस कोण में दोष होने पर पितृ दोष के साथ-साथ वंश-वृद्धि में भी रुकावट आ सकती है। यहां निम्न वास्तु दोष से बचना चाहिए जैसे कि :-

दक्षिण-पश्चिम का कट जाना, यहाँ टॉयलेट बनाना, गड्ढा, सेप्टिक टैंक होना, इस दिशा में बहुत हल्के पर्दे, खुलापन, या अस्थिरता, इस दिशा में भारी निर्माण की कमी (नैऋत्य कोण को घर का सबसे ऊंचा और भारी हिस्सा होना चाहिए) नैऋत्य में पानी का स्रोत (बोरिंग, टंकी, फव्वारा) होना। इस दिशा में खाली स्थान या तहखाना होना, जिससे ऊर्जा कमजोर पड़ती है।

इस दिशा में निश्चित रूप से गार्डन बनाने से बचना चाहिए।

ब्रह्मस्थान घर का केंद्र अगर कबाड़ से भरा हो, भारी सामान से दबा हो, अंधेरा और बंद हो तो घर की ऊर्जा ठहर जाती है और पुराने पारिवारिक दोष बढ़ते हैं।

ब्रह्मस्थान में निश्चित रूप से सीढ़ियां बनाने से बचना चाहिए।

दक्षिण दिशा का बिगड़ना

दक्षिण दिशा परंपरा में पूर्वजों और यम से जुड़ी दिशा मानी जाती है। घर की दक्षिण दिशा में निम्नलिखित दोष हों, तो पितृ दोष बनने की संभावना बढ़ जाती है:

दक्षिण दिशा में भारी गंदगी, कबाड़, या टूटा-फूटा सामान रखना, दक्षिण दिशा में शौचालय या सेप्टिक टैंक का होना, यह पवित्रता को नष्ट करता है। दक्षिण दिशा में खिड़कियों या दरवाजों का अधिक होना, जिससे ऊर्जा का रिसाव होता है। इस दिशा में अंधकार, रोशनी की कमी, भारी कटाव भी नकारात्मक परिणाम देते हैं।

- **डॉ.योगेश व्यास, ज्योतिषाचार्य,** टापर,
(कुण्डली, अंक ज्योतिष, वास्तु एक्सपर्ट), नेट
(ज्योतिष शास्त्र एवं संस्कृत) पीएच.डी (ज्योतिष शास्त्र)
मो. 8058169959

भाजपा ने कुमावत बंधुओं को नगर परिषद में चुनाव प्रभारी बनाया

भाजपा ने **झुंझुनू नगर परिषद** के लिए **चेतन कुमावत** को चुनाव प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी गई है। पार्टी के इस फैसले के बाद स्थानीय स्तर पर चुनावी गतिविधियों को और गति मिलने की उम्मीद है। चेतन कुमावत को मिली जिम्मेदारी के तहत नगर परिषद क्षेत्र में संगठनात्मक गतिविधियों को गति देने, कार्यकर्ताओं के साथ समन्वय बनाने और चुनावी तैयारियों को व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाने पर फोकस रहेगा। साथ ही स्थानीय कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों के साथ बैठक कर चुनावी रणनीति तैयार करने की दशा में भी काम किया जाएगा।

निकाय चुनाव को लेकर भाजपा की ओर से बूथ स्तर तक संगठन को सक्रिय करने की कवायद शुरू की जा रही है। ऐसे में चुनाव प्रभारी की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जा रही है। पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच बेहतर तालमेल, स्थानीय मुद्दों की जानकारी और चुनावी तैयारियों को लेकर जिम्मेदारियां तय करने का काम भी इसी प्रक्रिया का हिस्सा रहेगा। चेतन कुमावत को झुंझुनू नगर परिषद की जिम्मेदारी मिलने से स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं में भी उत्साह है। आने वाले दिनों में पार्टी की ओर से बैठकें और संगठनात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाने की संभावना है। इन बैठकों में निकाय चुनाव को लेकर आगे की रणनीति पर चर्चा की जाएगी।

इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी द्वारा प्रदेश के पूर्व सह संयोजक सहकारिता प्रकोष्ठ **सुनील कुमावत** को **लक्ष्मणगढ़ नगर पालिका** के चुनाव प्रभारी नियुक्त किया है। इनके अनुभव, मेहनत और संगठन क्षमता से लष्मणगढ़ में भाजपा ऐतिहासिक जीत दर्ज करेगी।

वहीं भाजपा ने **नगर पालिका मुकुन्दगढ़** के लिए **कैलाश कुमावत** पूर्व प्रधान सांगानेर को प्रभारी बनाया है। ये इस नवीन दायित्व को अपनी कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन एवं संगठनात्मक अनुभव से बखूबी निभाऐंगे और भाजपा को जीत दिलाने का पूरा प्रयास करेंगे।

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976

Speciality :

1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com

Website : www.sandalwood.cn.com

SP CONSTRUCTION

Building INDIA'S Construction

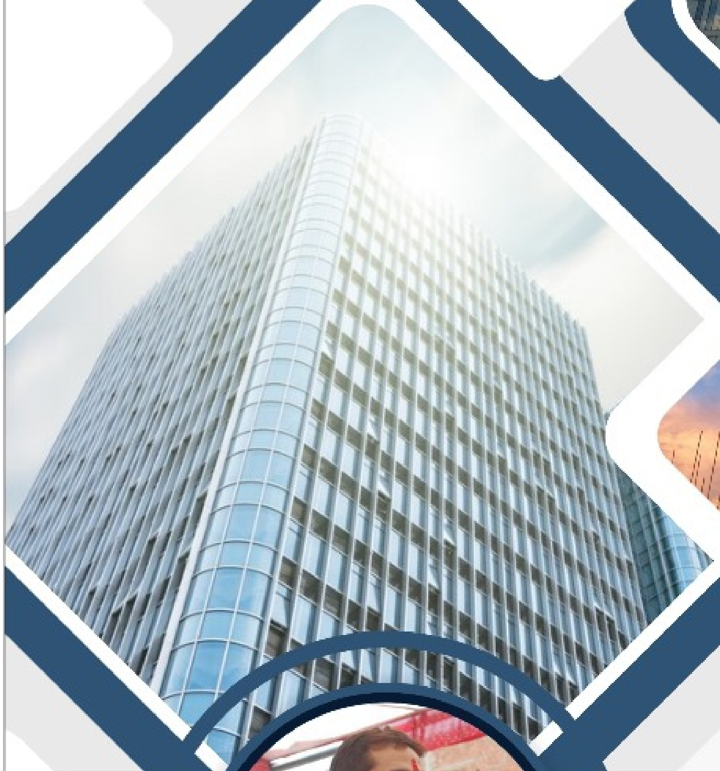

SHASHI PAL KUMAWAT

B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015

Web: spconst.co.in E-Mail: info@spconst.co.in

Vijay Anand
International Academy

**Vill. AkedaChoud, Via-Jahota. Tah. Rampura Dabri,
Distt. Jaipur (Raj) - 303701 Call 9460852525**

Special Features

1. 100% Result
2. Centrally Air Cooled School
3. Vehicle Facility
4. Smart Classrooms
5. Highly Educated Teachers
6. International Level Syllabus
7. Worldwide Education Approaches at Home
8. Computer Coding and Programming
9. Separate Labs for Primary, Middle and Higher Classes

Nursery to X
(English Medium)

Your child deserve the Best Education

CCTV
SURVEILLANCE
24X7

Director
Deendayal Kumawat

Co-ordinator
Monika Kumawat
(M.Com., B.Ed.)

Principal
Anita Chejara
(M.A., B.Ed.)

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018